दो शब्द

''सुगमस बाल बोध प्रश्नावली'' पुस्तिका जैन धर्म के सिद्धांतों को समझने के लिये आज के बालक, बालिकाओं के साथ सुधी पाठकों के लिय ''गागर में सागर'' के समान लाभप्रद व ज्ञानोपयोगी हैं। इसमें प्रवेशिका के ज्ञान पिपासुसओं को एक मार्गदर्शक का काम करती है।

हमें नित्य प्रति, दैनिक क्रिया कलापों में आने वाली विनती, स्तुति, मौलिक सिद्धांद प्रश्नोत्तर के रूप में सरलता, सुगमता से समझाकर अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिय यह प्रथम सोपान है। उत्तर इतने सुगमता से दिये गये हैं कि वे जैन सिद्धांत ग्रंथों के लिय ''मील का पत्थर'' साबित होंगे।

ऐलक 105 श्री दयासागर जी महाराज ने अपनी सरलतम शैली से विषय वस्तु को सारगमिर्भत ढंग से समझाया।

यह पुस्तिका नव प्रवेश अध्ययन करने वालों के लिये अत्यंत लाभकारी होगा।

महाराजजी के चरणों में त्रिवार इच्छामी...

दिनांक 27.10.2015
'शरद पूर्णिमा'

डॉ. अरविन्द जैन
ए2/104, पेसेफिक ब्लू
होशंगाबाद रोड, भोमाल (म.प्र.)

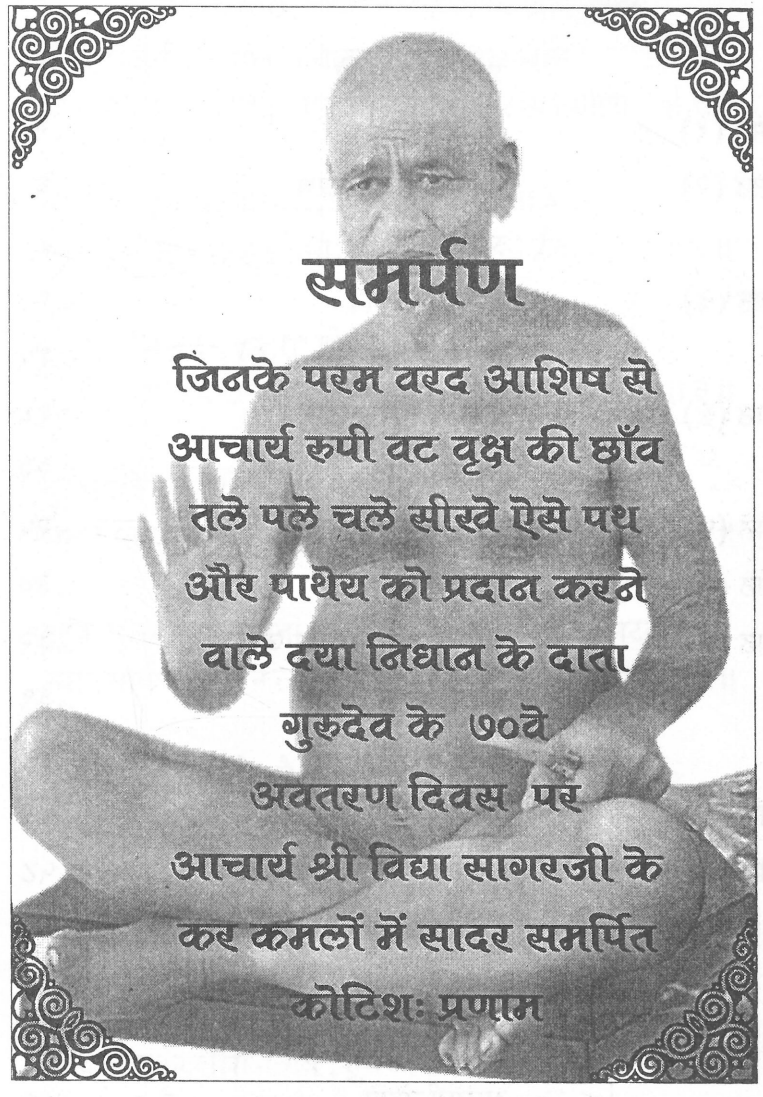

अनुक्रमणिका

	प्रातःकाल स्तुति	..१
पाठ (१)	महामंत्र	..२
पाठ (२)	मङ्गल उत्तम शरण	..६
	प्रार्थना गीत	..८
पाठ (३)	तीर्थंकर विज्ञान	..९
	दिनचर्या गीत	..१५
पाठ (४)	जैनों के तीन कुलाचार	..१६
	जिनेन्द्र स्तुति	..२२
पाठ (५)	जीव अजीव विवेचन	..२५
पाठ (६)	मुक्त जीव	..३०
पाठ (७)	जीव के भेद (स्थावर जीव)	..३२
	त्रस जीव	..३९
	समय का मुल्य	..४१
पाठ (८)	इन्द्रिय विज्ञान	..४२
पाठ (९)	जगत के पांच संसारी जीव	..५८
	• सायंकाल स्तुति	..७६
	• गुरुभक्ति भजन	..७७
	• पंञ्चगुरु भक्ति	..७८
	• आचार्य वंदना	..८०
	• मंगल चातुर्मास कब और कहाँ	..८३

प्रातःकाल स्तुति

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर भविजन की अब पूरो आस।
ज्ञान भानु का उदय करो मम, मिथ्यातम का होय विनाश ॥ १॥

जीवों की हम करुणा पाले, झूठ बचन नहीं कहें कदा
पर धन कबहुँ न हरहूँ स्वामी, ब्रह्मचर्य व्रत रखे सदा ॥ २॥

तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा, तोष सुधामृत पिया करें।
श्री जिन धर्म हमारा प्यारा, तिसकी सेवा किया करें ॥ ३॥

दूर भगावे बुरी रीतियाँ, सुखद-रीति का करे प्रचार।
मेल मिलाप बढावे हम सब धर्मोन्नति का करे प्रचार ॥ ४॥

सुख-दुःख में हम समता धारें, रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें, वृद्धि करें निज आत्मबल ॥ ५॥

अष्टकर्म जो दुःख हेतु है, तिनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपें निरंतर, विघ्न शोक सब ही टल जाय ॥ ६॥

आतम शुद्ध हमारा होवे, पाप मैल नहीं चढे कदा।
विद्या की हो उन्नति हममें, धर्म ज्ञान हूँ बढ़े सदा ॥ ७॥

हाथ जोड़कर शीश नवावें, तुमको भविजन खड़े खड़े।
यह सब पूरों आस हमारी, चरण शरण में आन पड़े ॥ ८॥

पाठ १ पहला

महामंत्र

णमो अरिहंताणं

लोक के सभी अरिहन्तों को नमस्कार

णमो सिद्धाणं

लोक के सभी सिद्धों को नमस्कार

णमो आयरियाणं

लोक के सभी आचार्योंको नमस्कार

णमो उवज्झायाणं

लोक के सभी उपाध्यायों को नमस्कार

णमो लोए सव्व साहूणं

लोक के सभी साधुओं को नमस्कार

यह अनादिअनिधन मन्त्र है, जो प्राकृत भाषा में हैं। इसमें जगत के श्रेष्ठ आत्माओं को नमन किया गया है। यह समस्त मंत्रो का राजा कहा गया हैं। इसको बहुत से नामों से जाना जाता है। इस मन्त्र को किसी ने बनाया नहीं हैं और कभी इसका अंत भी नहीं होता। कहा जाता हैं की इस मंत्र के द्वारा ८४ लाख मन्त्रों की उत्पत्ती हुई है। जो शुद्ध मन के द्वारा मन्त्रों को मनन करता हैं उसकी सोई हुई चेतना जागृत होती है। ऐसे बीज अक्षरों को ही मन्त्र कहा जाता हैं। इस पञ्च नमस्कार मन्त्रके माध्यम से प्राणीमात्र को दुनिया की कोई भी शक्ति पराजित नहीं कर सकती। यह मन्त्र तीनों लोकों में अनुपम एवं सारभूत हैं।

णमोकार मन्त्र का महात्म्य

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलम्॥

शब्दार्थ

एसो	-	यह
पंच णमोयारो	-	पंच नमस्कार मन्त्र
सव्व पावप्	-	सब पापों का
पणासणो	-	नाश करने वाला
च	-	और
सव्वेसिं	-	समस्त
मंगलाणं	-	मंगलों में
पढमं	-	पहला (सर्वप्रथम)
मंगलं	-	मंगल
होइ	-	हैं

भावार्थ

यह णमोकार मन्त्र सबसे महान हैं, प्रत्येक कार्य करने से पहले यह मन्त्र जरुर ही बोलना चाहिए। इसका प्रतिदिन जाप, ध्यान करने से महारोग, कष्ट एवं विपत्तियाँ दुःख दूर होकर समस्त सुखों की प्राप्ती सहज रुप से होती है।

इसलिए इस मन्त्रराज की प्रतिदिन एक माला मन लगाकर अवश्य करना चाहिए।

प्र.१) मूल मन्त्रराज में किसको नमस्कार किया गया है ?

उत्तर- मूल मन्त्रराज में पांच परमेष्ठीयों को नमस्कार किया गया है।

प्र.२) परमेष्ठी किसे कहते है ?

उत्तर- जो परम (श्रेष्ठ) पद में रहते है जिन्हें राजा चक्रवर्ती इंद्र भी नमस्कार करते हैं उन्हे परमेष्ठी कहते है।

३) णमोकार मन्त्र में सबसे बड़े परमेष्ठी कौन है ?

उत्तर- णमोकार मन्त्र में सबसे बड़े अरिहन्त परमेष्ठी ही है ।

४) अरिहन्त परमेष्ठी किसे कहते है ?

उत्तर- जिन्होने घातिया कर्मोको नाश कर अनन्त चतुष्टय को प्राप्त कर लिया है तथा जो वीतरागी सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी होते है उन्हें अरिहन्त परमेष्ठी कहते है।

५) अरिहन्त परमेष्ठी की मुख्य पहचान क्या है ?

उत्तर- जो समस्त दोषों से रहित है, जिन्हें भूख, प्यास, जन्म, मरण, राग, द्वेष, मोह आदि नहीं होते, जो दिगम्बर और प्रशांत मुद्रा के धारी जो समस्त अस्त्र वस्त्र एवं शस्त्रों से रहित होते है यही अरिहन्त की मुख्य पहचान है ।

६) णमोकार मन्त्र में द्वितीय परमेष्ठी कौन से होते हैं ?

उत्तर- णमोकार मन्त्र में द्वितीय सिद्ध परमेष्ठी होते है ।

७) सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते है ?

उत्तर- जो सभी कर्मोसे रहित होते है उन्हे सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

८) सिद्ध परमेष्ठी की मुख्य पहचान बताओं ?

उत्तर- जो संसार से छूटकर शरीर रहित हो गये हैं, जिन्होंने हमेशा के लिए सच्चा सुख प्राप्त किया हैं, जो पुनः संसार में लौटकर पुनः नहीं आते यह उनकी मुख्य पहचान है ।

९) आचार्य परमेष्ठी किसे कहते है ?

उत्तर- जो मुनि संघ के नायक होते है, जो मुनियों को दीक्षा और दंड देते है, जो पंचाचार का पालन करते है और अपने शिष्यों से उनका पालन कराते है वह आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं।

१०) उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं।

उत्तर- जो मुनि संघ में पठन-पाठन कराते हैं जिन्हें आगम ग्रंथो का विशेष ज्ञान होता है । उन्हे उपाध्याय कहते हैं।

११) अंतिम और आदिम परमेष्ठी किसे कहते है ?

उत्तर- जो नग्न दिगम्बर होते हैं, तथा समस्त पापों एवं विषय कषायों से रहित "ज्ञान, ध्यान तप" में रत होते है उन्हें अंतिम और आदि (साधु) परमेष्ठी कहते हैं।

१२) साधु परमेष्ठी की मुख्य पहचान बताओं ?

उत्तर- जो नग्न शरीर के धारक राग, श्रृंगार से रहित, जो केशों का लौंच करते हैं उन्हे साधु परमेष्ठी कहते हैं ।

१३) कितने परमेष्ठी वीतरागी और नग्न दिगम्बर होते है ?

उत्तर- सिद्धों को छोड़कर चार परमेष्ठी वीतरागी और नग्न दिगम्बर होते हैं ।

१४) बताओ जब सिद्ध परमेष्ठी महान हैं तो अरिहन्तों को सर्वप्रथम नमस्कार क्यों किया गया ?

उत्तर- अरहन्त परमेष्ठीयों ने ही संसारी भ्रमित जीवों को मोक्ष मार्ग एवं तत्वों का उपदेश देकर हमारा उपकार किया तथा उन्ही ने बताया कि सिद्ध परमेष्ठी महान् हैं इसी कारण अरिहन्तों को हम पहले नमस्कार करते है।

१५) बताओ आर्यिका जी, ऐलक, क्षुल्लक महाराज कौनसे परमेष्ठी हैं ?

उत्तर- आर्यिका जी, ऐलक, छुल्लक महाराज कोई भी परमेष्ठी नहीं हैं, क्योकि वह परिग्रह से युक्त होते है।

१६) वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में कितने परमेष्ठी हैं ?

उत्तर- वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में आचाराङ्ग सूत्र के अनुसार दो ही आचार्य एवं साधु परमेष्ठी होते है ।

१७) परमात्मा पद प्राप्त करने के लिए मुख्य रुप से किस परमेष्ठी पद की आवश्यकता होती हैं।

उत्तर- परमात्मा पद प्राप्त करने के लिए मुख्य रुप से साधु (मुनि) पद प्राप्त करना अनिवार्य है ।

ध्यान रहें...

मुनीराज को वंदन करते समय नमोस्तु
आर्यिका को वंदन करते समय वंदामी
ऐलकजी, क्षुल्लकजी, को धोक देने पर इच्छामी
व्रतियों को अभिवादन करते समय वंदना करनी चाहिए

पाठ
२
दूसरा

मङ्गल उत्तम शरण

(चत्तारि दण्डक)
चत्तारि मंगल

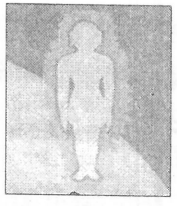
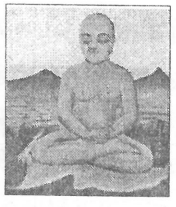
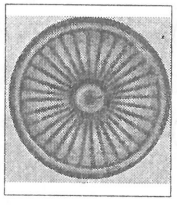

लोक में चार मंगल है ।

१) अरिहन्ता मंगलं - लोक में अरहन्त मंगल हैं ।
२) सिद्धा मंगलं - लोक में सिद्ध मंगल है ।
३) साहू मंगल - लोक में साधु मंगल हैं ।
४) केवलि पण्णतो धम्मो मंगल - केवलि के द्वारा कहा गया धर्म मंगलमय हैं।

१) मङ्गल किसे कहते है ?

उत्तर - मङ् - पाप, गल - गलाने वाला अर्थात जो पापों को गलाने वाला और मंङ्ग - आनंद, ल - लाने वाला अर्थात जो आनंद को लाता है वह मंगल कहलाता है।

चत्तारि लोगुत्तमा

लोक में चार उत्तम हैं ।

(१) अरिहन्ता लोगुत्तमा - लोक में अरहन्त उत्तम हैं ।
(२) सिद्धा लोगुत्तमा - लोक में सिद्ध उत्तम हैं ।
(३) साहू लोगुत्तमा - लोक में साधु उत्तम हैं ।
(४) केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा - लोक में केवलि के द्वारा कहा गया धर्म सर्व उत्तम हैं।

उत्तम किसे कहते हैं ?

- जो संसारी जीवों को श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में सहायक होते हैं उन्हे उत्तम कहते है।
- जगत में जिनका अज्ञान रुपी अंधकार दूर हो गया है वह भी उत्तम कहलाता है ।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि

मैं लोक में चार की शरण को प्राप्त होता हूँ ।

अरहंते सरणं पव्वज्जामि - मैं जगत में अरहंत की शरण में जाता हूँ ।

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि - मैं जगत में सिद्ध की शरण में जाता हूँ ।

साहू सरणं पव्वज्जामि - मैं जगत में साधु की शरण में जाता हूँ।

केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि - मै केवली द्वारा कहे हुए धर्म की शरण में जाता हूँ ।

जगत में शरण कौन हैं ?

स-संसार, रण-युद्ध जो संसार में युद्ध एवं मरण से बचाता हैं वही जगत में शरण हैं ।

यहीं चारों संसार में मंगल, उत्तम तथा शरण होते हैं।

प्रार्थना गीत

वीर प्रभु की हम सन्तान,
हमको बनना है भगवान ॥ टेक॥
सत्य अहिंसा इनका गान,
जीव सताना दुःख की खान। वीर..
निशि भोजन में हिंसा जान,
पानी पीना पहले छान। वीर..
जिन दर्शन का रखना ध्यान,
इससे बनते सब भगवान। वीर..
णमोकार का करना ध्यान,
हर मानव की इसमें शान। वीर..

पाठ ३ तीसरा

तीर्थंकर विज्ञान

तीर्थंकर का लक्षण - जो धर्मरुपी तीर्थ को चलाते हैं, जिनके कल्याणक होते हैं जो भव्य जीवों को धर्म का उपदेश देते हैं। जो आगम और चतुर्विध संघ का निर्माण करते हैं । जिनका समवशरण रहता जो संसाररुपी सरिता को पार करने के लिए धर्म शासनरुपी सेतु का निर्माण करते हैं।

तीर्थंकरों के सचित्र चिन्ह

१) श्री आदिनाथ जी	बैल	
२) श्री अजितनाथ जी	हाथी	
३) श्री संभवनाथ जी	घोड़ा	
४) श्री अभिनंदननाथ जी	बंदर	
५) श्री सुमतिनाथ जी	चकवा	
६) श्री पद्मप्रभु जी	लालकमल	
७) श्री सुपार्श्वनाथ जी	साथिया	
८) श्री चंद्रप्रभु जी	अर्ध चंद्रमा	

"बड़ो का आदर करों"

९) श्री पुष्पदंत जी	मगर
१०) श्री शीतलनाथ जी	कल्पवृक्ष
११) श्री श्रेयांसनाथ जी	गैंडा
१२) श्री वासुपूज्यनाथ जी	भैंसा
१३) श्री विमलनाथ जी	शूकर
१४) श्री अनंतनाथ जी	सेही
१५) श्री धर्मनाथ जी	वज्रदंड
१६) श्री शान्तिनाथ जी	हिरण
१७) श्री कुन्थुनाथ जी	बकरा
१८) श्री अरहनाथ जी	मछली
१९) श्री मल्लिनाथ जी	कलश
२०) श्री मुनिसुव्रतनाथ जी	कछुआ
२१) श्री नमिनाथ जी	नील कमल

"रोग तथा शत्रु को छोटा मत समझो"

२२) श्री नेमिनाथ जी	शंख
२३) श्री पार्श्वनाथ जी	सर्प
२४) श्री महावीरस्वामी जी	सिंह

प्रथम तीर्थंकर के कितने नाम हैं?

- आदिनाथजी, वृषभनाथजी और ऋषभनाथजी हैं ।
- पुष्पदंतजी का दूसरा नाम सुविधिनाथजी भी हें ।
- नेमीनाथ का दूसरा नाम अरिष्ट-नेमीजी भी हैं ।
- महावीर के नाम-वर्धमान, सन्मति, वीर और अतिवीर के भेद से चार नाम और भी है ।
- भरत क्षेत्र में चौबीस तीर्थंकर ही होते हैं ।
- १२, १९, २२, २३, २४ यह पाँच तीर्थंकर आजन्म ब्रह्मचारी रहें । अर्थात इनका विवाह नहीं हुआ था ।

प्र.१) बताओ तीर्थंकर की मुख्य पहचान क्या हैं ?

उत्तर- जिनका समवशरण होता हैं तथा जिन्हे शत इन्द्र पूजते हैं यही इनकी मुख्य पहचान हैं ।

प्र.२) तीर्थंकर देव गति के जीव होते हैं या मनुष्य गति के हैं?

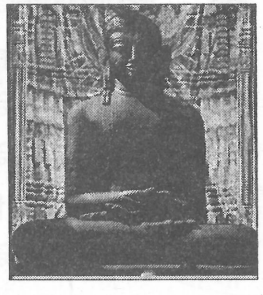

उत्तर- तीर्थंकर मनुष्य गति के ही जीव होते हैं।

३) तीर्थंकर कौन से परमेष्ठी होते हैं ।

उत्तर- तीर्थंकर अरिहन्त परमेष्ठी ही होते हैं ।

४) बताओ तीर्थंकर कहाँ पर होते हैं ?

उत्तर- तीर्थंकर कर्म भूमीयों के आर्यखंड में होते हैं ।

अपने विचार शुद्ध तथा लक्ष्य उँचा रखो।

५) मंदिरजी में तीर्थंकरों की जिनबिम्ब की क्या पहचान हें ?

उत्तर- मंदिरजी में विराजमान तीर्थंकरों की प्रतिमा पर नियम से चिन्ह सहित होते हैं यही उनकी पहचान हैं ।

६) क्या मंदिरजी में विराजमान जिनबिम्ब तीर्थंकर की ही होती हैं?

उत्तर- मंदिरजी में विराजमान जिनबिम्ब अरिहंतों एवं सिद्धो की भी होती हैं, अरहन्तो को सामान्य केवलि भी कहते हैं ।

७) बताओ कितने तीर्थंकरों के एक से अधिक नाम होते हैं?

उत्तर- पहले, नौवें, बाबीसवें एवं अन्तिम इन चार तीर्थंकरों के एक से अधिक नाम होते हैं ।

८) बताओं तीर्थंकरों के चिन्ह सबसे अधिक कौन इंदिय वाले जीवों के हैं ?

उत्तर- १७ तीर्थंकरों के चिन्ह संज्ञी पञ्चेद्रिय तिर्यंच जीवों के हैं ।

९) बताओं तीर्थंकरो के चिन्हों में पञ्चेद्रिय तिर्यंच जलचर जीवों के कितने चिन्ह हैं ?

उत्तर- ९वें, १८वें, २०वें इन तीन तीर्थंकरों के पञ्चेद्रिय तिर्यंच जलचर जीवों चिन्ह हैं ।

१०) उन सभी तीर्थंकरों के चिन्हों में से कितने नभचर पञ्चेद्रिय तिर्यंचों के चिन्ह होते हैं ?

उत्तर- मात्र पाँचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ जी का नभचर चकवे का चिन्ह हैं ।

११) उन कितने तीर्थंकरों के चिन्ह निर्जीव हें ?

उत्तर- ७वें, १५वें, १९वें यह तीन तीर्थंकरो के चिन्ह निर्जीव हैं ।

१२) कितने तीर्थंकरों के चिन्ह एकेन्द्रियवाले हैं ?

उत्तर- चार तीर्थंकरों के चिन्ह ६वे,८वे,१०वे, २१वे एकेन्द्रिय होते हैं ।

१३) कितने तीर्थंकरो के चिन्ह दो इन्द्रिय जीव के हैं ?

"चिन्ता से रुप बल ज्ञान नाश होता हैं इसलिए चिन्ता नहीं चिन्तन करों"

उत्तर- मात्र २२ वे नेमिनाथ तीर्थंकर का चिन्ह शंख दो इन्द्रिय जीव हैं ।

१४) अरहन्त परमेष्ठी कितने होते हैं ?

उत्तर- अरहन्त परमेष्ठी असंख्यात होते हैं।

१५) तीर्थंकर सबसे पहले होते हें या सिद्ध परमेष्ठी पहले होते हैं?

उत्तर- तीर्थंकर सबसे पहले होते हैं, जो बाद में नियम से सिद्ध परमात्मा बनते हैं ।

१६) क्या समस्त अरहन्त परमेष्ठी तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर- नहीं, समस्त अरहन्त परमेष्ठी तीर्थंकर नहीं होते ।

१७) संसार में महापुण्य प्रकृति कौन सी होती हैं ?

उत्तर- संसार में महापुण्यशाली प्रकृति तीर्थंकर होती हैं, जो तीनों लोकों के चराचर जीवों से पूज्य होती हैं ।

१८) वर्तमान काल के सबसे अधिक तीर्थंकरों के शरीर का रंग कौनसा था ?

उत्तर- सबसे अधिक १६ तीर्थंकरों का शरीर का रंग (वर्ण) कंचन (सोना) वर्ण के समान था ।

१९) सफेद रंग के शरीरवाले कितने तीर्थंकर थे ?

उत्तर- सफेद रंग के शरीरवाले ८, ९ यह दो तीर्थंकर थे ।

२०) हरे रंग के शरीरवाले कौन कौन से तीर्थंकर थे ?

उत्तर- हरे वर्ण के शरीरवाले पार्श्वनाथ और सुपार्श्वनाथ जी दो तीर्थंकर थे।

२१) लाल वर्ण वाले कौनसे तीर्थंकर थे ?

उत्तर- लाल वर्ण वाले श्री पद्मप्रभ जी और वासुपूज्य जी यह दो तीर्थंकर थे।

२२) श्याम वर्ण वाले कौन कौन से तीर्थंकर थे ?

उत्तर- श्याम वर्ण वाले श्री मुनिसुव्रत जी एवं श्री नेमिनाथ जी थे।

२३) बताओ क्या तीर्थंकर अवतार लेते हैं ?

उत्तर- जैन धर्म के अनुसार तीर्थंकर किसी प्रकार के भी अवतार नहीं लेते, वह तो

"मनुष्य के द्वारा किया गया गुनाह छिपता नहीं बल्कि उसके मुख पर लिखा रहता है"

आत्म साधना से ही तीर्थंकर बनते हैं ।

२४) तीर्थंकर प्रकृति की प्राप्ति किसको होती हैं ?

उत्तर- तीर्थंकर प्रकृति की प्राप्ती विरले ही विशिष्ट साधकों की जन्म जन्मांतरो की साधना के बाद प्राप्त होती हैं ।

२५) तीर्थंकर महापुण्य प्रकृति का योग कैसे जीवों को होता हैं?

उत्तर- तीर्थंकर महापुण्य प्रकृति का योग दर्शन विशुद्धि आदि सोलह एवं लोक कल्याण की सुदृढ भावनाएँ भाने वाले जीवों को सुयोग प्राप्त होता हैं ।

२६) तीर्थंकरों के कितने अवसर कल्याणकारी होते हें?

उत्तर- तीर्थंकरों के समस्त प्रसंग संसारी जीवों के कल्याणकारी होते हैं । उसमें से कुछ निम्न लिखित हैं ।

१) तीर्थंकरो का जगत में आना । (गर्भावतरण)

२) तीर्थंकरों जगत में जन्म लेना । (जन्मावतरण)

३) तीर्थंकरों का दीक्षा धारण करना । (दीक्षावतरण)

४) तीर्थंकरों का केवल ज्ञान प्राप्त करना । (ज्ञानावतरण)

५) तीर्थंकरों का निर्वाण प्राप्त करना । (मोक्षावतरण)

२७) तीर्थंकरों की प्रमुख विशेषताएँ बताओं ?

उत्तर- तीर्थंकरों के आठ प्रतिहार्य एवं चौतीस अतिशय भी रहते हैं।

प्रातःकाल में ४ से ५ बजे (ब्रम्हमुहूर्त) के बीच उठता हैं, उसे देवता के समान कहते हैं ।
जो प्रातःकाल ५ से ६ बजे के बीच उठता हैं, वह व्यक्ती मनुष्य के समान होता हैं ।
जो प्रातः ६ से ७ बजे के बीच उठता हैं, वह व्यक्ति जानवर समान होता हैं ।
जो प्रातः ७ बजे के बाद उठता हैं, वह व्यक्ति राक्षस के समान होता हैं ।

दिनचर्या गीत

उठ लो जल्द प्रभु वीर का नाम,
बड़े बुढ़ो को नित करो प्रणाम।
बालक अपने कुल को जानो,
नित प्रति बड़ो की बात मानो ॥ १ ॥
हाथ-पैर नख स्वच्छ है रखना,
नित्य अक्षत ले जिन दर्श करना ।
शांत मौन से भोजन करना,
बिना छाने जलपान न करना ॥ २ ॥
पाठशाला को नित है जाना,
अपना मन पढने मे लगाना ।
चुगलखोरी तुम मत हैं करना,
कभी किसी से तुम ना लड़ना ॥ ३ ॥
संध्या पूर्व नित भोजन करना,
रात्रि भोजन से बचते रहना।
टी.वी. से मत चिपके रहना,
गृह कार्य तुम नित हैं करना ॥ ४ ॥
कष्ट दुखों में तुम ना कुलो,
सदाचार को तुम ना भूलो।
वस्तु देख मत ललचाओ जी,

पाठ ४ चौथा

जैनों के तीन कुलाचार

दोहा - निशि भोजन बिन गालन, जल, पीवें ना सुधीजन।
रोज करें जिनदर्शन, कुलाचार ये तीन जैन जन॥

हम सबको बड़े सौभाग्य से जैन धर्म एवं उच्च कुल की प्राप्ती हुई हें । हमको अपना आचार विचार खान-पान, धर्म के अनुसार समुचित बनाना चाहिए, जिसके लिए नीचे लिखे तीन कुलाचार आवश्यक हैं ।

रात्री भोजन त्याग, पानी छान कर पीना, जिनदेव दर्शन

प्र. १) जैन किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिनेंद्र भगवान के बतलाए हुए मार्ग पर जो चलते हैं अथवा जो अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करते हैं उन्हे जैन कहते हैं।

प्र.२) जैन धर्म के उपासक किसकी आराधना करते हैं ?

उत्तर- जैन धर्म के उपासक अहिंसामयी वीतराग धर्म की उपासना करते हैं ।

प्र.३) कुल किसे कहते हैं ?

उत्तर- पिता के वंश को कुल कहते हैं ।

प्र.४) आचार किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो कुल के द्वारा पूर्वजों से चली आ रही धरोहर हैं, उसका धर्म आचरण करना ही कुलाचार कहलाता हैं ।

१) रात्रि (निशि) भोजन का त्याग

आज इस काल में जिस तरह से मनुष्य उच्छृंखल, निरंकुश, अमानवीय एवं धर्म संस्कृति कुलाचार आदि के विरोधी होकर अपनी मिथ्या भ्रांति के कारण अहंकार में डूबा हुआ भयानक स्थिती का स्पष्ट संकेत दे रहा हैं । धर्म कहता हैं, जो सम्हल गया वह अनेक प्रकार के पापों से अपने आपको बचा लेता हैं । जो अपनी हठ और असत्यता पर कायम रहा वह एक ना एक दिन स्वयं डूबेगा और दुसरों को भी डुबा देगा, यह निश्चित सत्य जिनवाणी और धर्मगुरु के वचन हैं। यह शरीर एक मोटर गाड़ी

"हमेशा सोकर जल्दी उठा करों"

के डायनामा के तरह हैं, जिसमें पेट्रोल या डीजल की आवश्यकता होती हैं । ठीक इसी प्रकार मनुष्य प्राणीयों की जीवन रुपी गाड़ी तन (शरीर) हैं । जिसको चलाने के लिए भोजन-पानी की परम आवश्यकता होती हैं। यदि भोजनपान न दिया जाये तो जीवन रुपी गाड़ी चलना कठिन होगा । ज्यादा भोजन दिया जाये तो भी गाड़ी काम नहीं करती, गाड़ी बंद हो जाती हैं ।

मनुष्य को भोजन पान की परम आवश्यकता होती हैं इसी बात को समझना अनिवार्य हैं । परन्तु वह कब और किस प्रकार से देना यही बात रात्रि भोजन के त्याग और पानी छाँन के पीने के माध्यम से बताई गयी हैं ।

प्र.१) रात्रि भोजन क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर- रात्रि भोजन करनें से सर्व प्रथम भोजन का पाचन तंत्र ठीक तरह से नहीं होता। दुसरी बात हमारा अहिंसा परम धर्म उसका भी पालन नहीं होता ।

प्र.२) क्या रात्रि भोजन त्याग करने का और कोई कारण भी हैं ?

उत्तर- रात्रि में मानव का पाचन तंत्र बंद हो जाता हैं और भोजन का पाचन ठीक ढंग से ना होने के कारण अनेक रोगों की उत्पत्ति होती हैं ।

प्र.३) सूर्य प्रकाश में ही जैन लोग किस कारण भोजन करते हैं ?

उत्तर- सूर्य प्रकाश में अनेक प्रकार के कीटाणु (बॅक्टेरिया) उत्पन्न नहीं होते जैसे सूर्य अस्त होता हैं वातावरण ठंडे होने पर बहुत प्रकार के मोटे मोटे जीव उत्पन्न होकर हमारे घर के दरवाजों खिड़की पर उड़ते हुए दिखाई देते हैं इसलिए जैन लोग सूर्यप्रकाश में ही भोजन करते हैं ।

प्र.४) रात्रिभोजन त्याग करने वालों को कितने बजे तक भोजन करना चाहिए ?

उत्तर- रात्रि भोजन त्याग करने वालों को सूर्य अस्त होने के पौन घंटे पूर्व तक भोजन पान करना चाहिए ।

प्र.५) बताओं रात्रि में भोजन ना करें परन्तु रात्रि में भोजन बनाकर खिला सकते हैं?

उत्तर- आप रात्रि में भोजन भले ही ना करें परन्तु रात्रि में रसोई बनाने से अधिक हिंसा होगी ही, और वह भोजन भी आमिष (अशुद्ध) हो जाता हैं उस भोजन करने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं इसलिए दिन में बना हुआ भोजन दिन में ही करना चाहिए। दीपक एवं बिजली के प्रकाश में सूक्ष्म जीव दिखाई नहीं देते हैं यदि आप अपने भविष्य को सुखी बनाना चाहते हैं तो आपको चारो प्रकार से रात्रि भोजन जीवन पर्यन्त के लिये त्याग करना चाहिए।

२) जल छानकर पीना

पानी (जल) को संस्कृत भाषा में जीवन भी कहा गया हैं। जल के माध्यम से मानव वा अन्य प्राणी बिना भोजन किये बहुत समय तक जीवन बराबर बनाये रख सकते हैं। परन्तु इस वर्तमान परिवेश में इस धरा पर जल तो बहुत हैं परन्तु स्वच्छ एवम् पीने योग्य पानी की एक बड़ी ही समस्या इस मानव समाज पर आ पड़ी हैं।

चूकिं मानव समाज द्वारा मुख्यतः महान राष्ट्रों एवं महानगरों कस्बों के माध्यम से पानी के मुख्य जो स्रोत हैं उनको ही दूषित किया जा रहा हैं। इसी को ध्यान में रख करके हमारे देश में एक सूत्र दिया गया हैं। ''जल ही जीवन हैं'' उसे प्रदूषित होने से बचाओ परन्तु संचार के साधनों मात्र से यह समस्या का समाधान संभव नहीं।

वर्तमान समस्या का मुख्य कारण जंगल एवं जमीन हैं आज का मानव इन दोनों को कुछ भी ना समझ कर उस पर भारी कुठाराघात कर अपने ही पैरों को तोड़ने जैसा कार्य कर रहा हैं। वास्तव में हम विचार करे तो ज्ञात होता हैं कि बरसात पेड़ो (वनों) एवं वन्य जन्तुओं को विशेष रुप से बरसता हैं जिसमें मानव को तो पानी ब्याज में ही मिल जाता हैं। परन्तु यह मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा हें जिस के परिणाम हमारे आपके सामने हैं समय पर बरसात नहीं, कहीं अतिवृष्टि हो रही और भूगर्भ वैज्ञानिकों ने बोरिंग एवं ट्युबवेल से समस्या का निदान करना चाहा तो उसका परिणाम यह हुआ कि हमारी पृथ्वी सारी सछिद्र सहित हो कांपने लगी और जनजीवन तहसनहस हो रहा हैं। प्राकृतिक आपदाये मानव समाज ही नहीं जानवरों पशु पक्षीयों

आज का दिन घूमने में खो दोगे तो कल भी यही होगा और फिर सुस्ती आ जायेगी।

पर भी कहर ढा रहीं हैं। इस पृथ्वी पर जल जीवन ही नहीं आज अमृत भी कहे तो कम हैं क्योंकि उसके बिना खेती अन्य उद्योग तथा किसी प्राणी का जीवन नहीं चल सकता हैं। हमें इसी कारण विचार कर जंगल जमीन एवं जानवरों पर अत्याचार न कर उन्हें भी सुख दुख होता हैं। वह भी प्राणवान हैं उन्हे कष्ट देकर दुखित करके हम तीन काल में सुखी एवं समृद्ध नहीं हो सकते। यदि हमें अपना जीवन प्यारा है तो पशु पक्षी पृथ्वी जल वनस्पति आदिक को भी सुरक्षित रख उन्हें भी अभय दान देने की महान् आवश्यकता हैं। आज पाश्चात्य सभ्यता एवं भौतिकता में डूबा हुआ मनुष्य अपनी धरोहर छोड़कर पश्चिमी सभ्यता को अच्छा मान रहा हें। आलसी होकर अपने कुलाचार को छोड़ता जा रहा हैं। ध्यान रहे, पानी छानने का भी यंत्र आ गया हैं। उससे कचरा तो साफ हो जावेगा परन्तु जीव दया पालन नहीं होगा, जागृत रसायनिक पाऊडर (ब्लिचिंग) से पानी साफ तो हो जाता हैं परन्तु जीव नहीं बचते हैं। जीव भी समस्त साफ हो जाते हैं (मर जाते हैं) इसी कारण हमें चाहिए हम आलस्य प्रमाद छोड़कर तथा शर्म भी न करते हुए साफ स्वच्छ दोहरें सूती वस्त्र से पानी को छानकर ही प्रयोग करें जिस प्रकार से कोई भी व्यक्ति अपने टूव्हीलर से यात्रा कर रहा उसका पेट्रोल , डीजल समाप्त हो गया आपको उसमें तेल डालना है तो आप कैसे करते हैं बताओ तो आपके उस टैंक में छन्नी हैं तथा फिर भी उसमें तैल डालने के पहले एक कपड़ा और लगा लेते हैं। सोचें विचार करें एक मिश्नरी को गाड़ी को ठीक ढंग से चलाने के लिए आप कितने सजग एवं निरालसी रहते हैं। इसीलिए आपसे अपेक्षा हैं जो हम सब प्रणियों को प्राण प्रदान करने वाले जल उसे बिना शोधे देखे न उपयोग कर उसे छानकर शोध देख कर उपयोग करेंगे जीव हिंसा से बचेंगे तो हमारा आरोग्य भी ठीक रहेगा।

हमारे आचार्य भगवंतो ने कहा हैं की जल की एक बूँद में असंख्यात सूक्ष्मजीव रहते हैं। और यदि उनको कबूतरों का आकार दिया जाये तो एक बूँद के जीव समस्त जम्बूद्वीप में भर जायेंगें। वर्तमान काल में वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने सूक्ष्मदर्शी यन्त्र के माध्यम से देखा हैं और उन्होने बताया कि एक थेंम (बूंद) जल में ३६४५० जीव पाये जाते हैं। इन सब कारणों से ज्ञात होता हैं कि जो जीव जाति को समझते हैं उन पर विश्वास रखते हैं वह उन्हें बचाने का सुरक्षित रखने का भाव ना करें यह संभव

''सन्तोष रुपी धन के आगे सब धन धूल के समान हैं''

ही नहीं । इसीलिए हमें अपने विवेक का कर हम जीव दया को पालन करें । जब भी अपने जीवन में पानी का प्रयोग करें उसे छान करके सावधानी पूर्वक करें जिससे सहज ही हम अपने धर्म एवं कुलाचार का अनुपालन कर जग से प्रदूषण को दूर कर मानव समाज में अहिंसा दया धर्म की पुनःप्रतिष्ठा कर सकते हैं ।

- पानी छानने के पहले ध्यान रखे चाय की बड़ी छन्नी से पानी का कभी भी गालन नहीं होता हैं ।
- पानी छानने का तात्पर्य यह नहीं हैं कि किसी भी टौटी में एक कपड़ा बांध दिया या थैली लगा दी इस प्रकार से जल नहीं छनता हैं।
- श्रावक/गृहस्थ कुएँ से पानी निकाले तो अपनी बाल्टी या बर्तन को जोर से कुएँ में ना पटके
- पानी निकालते समय उस भरे हुए बर्तन को सावधानी पूर्वक बिना हिलाये निकाले जिसमें पानी कुँए में ना गिरे।
- जो बाल्टी फुटी होवे ऐसे बर्तन से पानी नहीं निकालना चाहिए।
- हमेशा साफ स्वच्छ एवम् मोटा खादी या सूती वस्त्र से निछिद्र कपड़े से जल गालना चाहिए।
- पानी को गालन (छानने) पर उसकी मर्यादा दो घड़ी अर्थात ४८ मिनीट तक ही रहती हैं और उसके बाद पुनः उसमें जीव उत्पन्न हो जाते हैं।

मुहुर्त गलितं तोयं - प्रासुक प्रहर द्वयं ।
उष्णोदक अहोरात्रं - पश्चात् सम्मूर्च्छनंभवेत् ॥

पानी गालन करके पीने से (अहिंसा धर्म का पालन) धर्म एवं जीव दया का पालन होता है तथा बहुत जीवों को अभयदान भी प्राप्त होता हैं । निष्प्रमाद पूर्वक रीतिपूर्व पानी छानकर पीने से पुण्य एवं अनर्थ दण्ड से भी बच जाते हैं।

- यह भी ध्यान रहें कि वह वस्त्र मैला कुचैला एवं एक-हरा ना रहें, दोहरे वस्त्र से जल गालन करें। वस्त्र ऐसा हो जिस कपडे से सूर्य की किरणें आर पार ना जायें ।
- पानी को छानते समय यह ध्यान रहे कि गुंडी या

कसेंड़ी से एक भी बूंद पानी नीचे जमीन पर न गिरने पायें ।

- पानी छानने से पहले जिस बर्तन में जल छानना हैं उस बर्तन को छने हुए जल से पहले तीन बार आवश्यक धोना चाहिए।
- पानी को छानने के बाद में कपड़े छन्ने को अच्छे से धोकर जीवाणी की एक भी बूंद पलटने में नीचे नही गिरे यह सावधानी रखें ।
- जीवाणी को कुँए या नदी का पानी कुँए एवं नदी में भी विधी पूर्वक कड़ेदार बाल्टी से जल की सतह तक भी भेजना चाहिए उपर से नहीं डालना चाहिए ।
- आचार्योंने भी कहा कि लवंग, सौप एवं कालीमिर्च आदिक के पाऊडर बनाकर उसमें मिलाने से ६ घंटे तक जल छना हुआ रहता हैं तथा थोड़ा पानी को गर्म करने पर १२ घंटे एवं चाय जैसे उबालने पर जल की मर्यादा २४ घंटे की हो जाती हैं । (परन्तु ध्यान रहें २४ घंटे बाद पानी का कोई उपयोग नहीं रहता हैं।)
- जल छानने का कपड़ा (छन्ना) वह भी पानी छानने के बाद में गीला नहीं रखना चाहिए सूखा लेवें, इसलिए अपने घर में २ कपडे (छन्ने) रखना चाहिए । पानी को छानने के बाद गालन कपड़े को जल जमीन में नहीं गिरना तथा उसको हाथ से पकड़कर मसलना नहीं चाहिए नहीं तो महान दोष लगता हैं।

जिंदगी का ठिकाना नहीं हैं।
जो कुछ तप-त्याग,
दान-पुण्य करना हैं, करते चलो।

"रात्रि में व सबेरे जल्द उठकर णमोकार मंत्र अवश्य पढों"

जिनेन्द्र-स्तुति

बुधजन जी कृत

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरण आयो शरणजी।
यों विरद आप, निहार स्वामी, मेट जामन मरण जी ॥१॥
तुम ना पिछान्यो, आन मान्या, देव विविध प्रकारजी।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकारजी ॥२॥
भव विकट वन मैं करम-बैरी, ज्ञानधन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो ॥३॥
धन घड़ी यों, धन दिंवस यो ही, धन्य जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरे उदय आयो, दरश प्रभुजी को लख लयो ॥४॥
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पैं धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत, कोटि रवि छवि को हरैं ॥५॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयों।
मो उर हर्ष ऐसो भयौ, मनु, रंक चिंता मणि लयो ॥६॥
मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, बीनऊँ तुम चरणजी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुन हुँ तारण तरणजी ॥७॥
जांचू नहीं सुरवास पुनि, नर राज परिजन साथ जी।
"बुध" जाँच हूँ तुम भक्ति भव-भव, दिजीए शिवनाथजी ॥८॥

३) जिन देव दर्शन

आरोग्य ठीक रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने रात्री भोजन त्याग और पानी छानकर पीने को कहा। स्वास्थ के बाद मन को शुद्ध शांत बनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने इष्ट जिनेन्द्र देव की आराधना करने को भी बतलाया हैं।

प्रातःकाल सर्व प्रथम शौचादि से निवृत्त हो शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनकर, बिन जूते, चप्पल, बैल्ट एवं मौजे (शाक्स) के, हाथ में अक्षत (पूँज) लेकर स्तुति बोलते हुए या णमोकार मन्त्र पढ़ते हुए देवदर्शन हेतु जिनालय नित्य प्रतिदिन अवश्य जाना चाहिए, जहाँ पर जाकर हमें विचार करना चाहिए हम कौन हैं, कहाँ से आएँ, क्या करना हैं, इस मानव जीवन में और ज्यादा कुछ नहीं श्री जी की तीन परिक्रमा लगाकर एक णमोकार की जाप भी देना चाहिए तथा कम से कम एक घड़ी २४ मिनीट तक मंदिरजी में अपने उपयोग को लगाने को एक पाठ भक्तामर जी का अवश्य करना। तथा भावना करना चाहिये हे भगवान हमारे पाप कर्मोका शीघ्र नाश होवें मै आप जैसा गुणवान भगवान बनूँ। हमें सद्ज्ञान की प्राप्ती होवें।

प्र.१) हम सबको जिनेंद्र भगवान के निश दिन दर्शन क्यों करना चाहिए?

उत्तर- हमें अपने परिणामों की पवित्रता एवं मन की शान्ति के लिए निश दिन जिन दर्शन करना चाहिए।

प्र.२) बताओं नित्य भगवान के वंदना करने से क्या मतलब, मन में ही स्मरण करने से नहीं चलेगा ?

उत्तर- संसारी प्राणी जिस प्रकार नित्य प्रतिदिन टी.वी देखते हैं, वही रोटी दाल भात खाते हैं जिस प्रकार बिना खाये, बिना देखे मन को शांति नहीं मिलती ठीक उसी प्रकार से प्रभु के दर्शन बिना मन में स्मरण मात्र से हमारा उपयोग नहीं शुद्ध होता इसी कारण दर्शन अनिवार्य हैं।

"सुख को इस प्रकार भोगों कि वह धर्म को हानिकरण न होवें"

प्र.३) बताओ दर्शन का अर्थ क्या हैं ?

उत्तर- दर्शन का मतलब देखना हैं । किसको देखना जिन्होंने अपने मन और इन्द्रियों को वीजित किया जो सर्व दर्शी हैं उनकी प्रशांत मुद्रा को निहारना ही दर्शन हैं ।

प्र.४) जिनदेव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो समस्त दोषों से निर्दोष हैं एवं वीतरागी रहते हैं।

प्र.५) जिन मंदिरजी में जिन भगवान के दर्शन करने से क्या लाभ बताईये ?

उत्तर-
- मन के विकारी भावो का अभाव ।
- अनेक उपवासों के बराबर फल मिलता ।
- पुण्य कर्म की प्राप्ती भी होती हैं।
- असंख्यात कर्मोकी निर्जरा होती हैं।

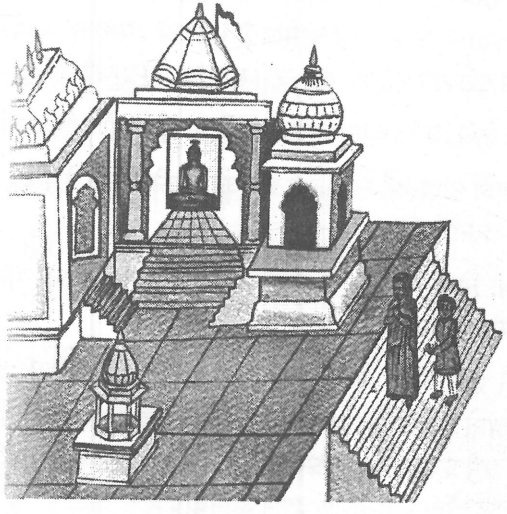

"हमेशा कुसंगति से बचते रहो"

पाठ ५ पाँचवाँ

जीव-अजीव विवेचन

प्र.१) जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो जीते हो, जिनमें जान हो, जो छोटे से बड़े होते हो, (श्वॉस लेवे तथा जिन्हे सुख दुःख होवे) जो जानने एवं देखने के गुण से युक्त होवे उन्हे जीव कहते हैं।

प्र.२) जगत में जीव के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर- वह दो प्रकार के होते हैं।
१) संसारी जीव २) मुक्त जीव

प्र.३) अजीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिनमें जानने देखने, समझने की शक्ति ना हो, जो छोटे से बड़े नहीं होते हैं तथा जो श्वॉस भी नहीं लेते हैं उन्हे अजीव या निर्जीव कहते हैं ।

प्र.४) अजीव की मुख्य पहचान बतलाईये ?

उत्तर- जिसमें स्पर्श रस रुप गंध एवं रंग पाये जाये, जो इंद्रियों से पकड़ में आते हैं वही अजीव की मुख्य पहचान हैं ।

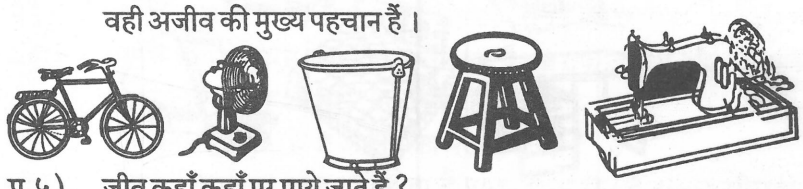

प्र.५) जीव कहाँ कहाँ पर पाये जाते हैं ?

उत्तर- जीव (आत्मा) संसार तथा मोक्ष में रहते हैं ।

संसारी जीव

६) संसार किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिसमें जीव परिवर्तन करता रहता हैं । अनेक प्रकार की योनियों में जन्म मरण को प्राप्त होता रहता हैं वही संसार कहलाता हैं।

७) संसारी जीव की क्या पहचान हैं ?

उत्तर- कर्म से सहित जीव को संसारी जीव कहते हैं। इन्हे पसीना भी आता हैं।

८) हम सब कौनसे जीव हैं ?

उत्तर- हम सब संसारी जीव ही हैं (जिन्हे भूख प्यास लगती) तथा जो सुख दुःख से सहित होते हैं ।

९) अजीव को हम किस प्रकार से पहचानते हैं।

उत्तर- जो जीव के गुणों से रहित होते हैं अर्थात जिसमें चेतनता नहीं होती है इसको पुद्गल भी कहते हैं ।(अर्थात पूर्ण होना, गलना, टूटना जिसका स्वभाव होवे उसे निर्जीव भी कहते हैं)

१०) पुद्गल को हम किस प्रकार से पहचानते हैं ।

उत्तर- जिसमें स्पर्श, रस, गंध तथा वर्ण पाये जाए वह नियम से इंद्रियों के पकड़ में आते हैं ।

११) अजीव कहाँ कहाँ पर रहते है।

उत्तर- अजीव सामान्य रुप से सभी जगह पाये जाते हैं ।

१२) अजीव पदार्थ के कम से कम दस नाम बतलाईये।

उत्तर- पेन, कॉपी, टेबल, कॅसेट, टेलीव्हीजन, इंटरनेट, टेलीफोन, मोबाईल, पलंग, मुद्रिका, ।

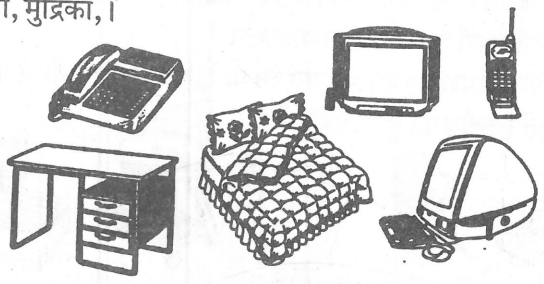

१३) क्या चलती हुए घड़ी, रेलगाड़ी, टी.वी. मोबाईल, विमान यह सब चलते हुए जीव हैं ?

उत्तर- चलती हुए घड़ी, रेलगाड़ी, टी.वी. यह सब निर्जीव होते चुकिं वह सुख व दुःख से रहित हैं । उनमें जानने समझने की शक्ति नहीं हैं। इसलिए यह सब अजीव ही हैं।

१४) अजीव संसारी होते है या मुक्त होते हैं ?

उत्तर- अजीव तो अजीव ही हैं । वह ना मुक्त हैं ना संसारी जीव हैं।

१५) क्या जीव अजीव बन सकता हैं ?

उत्तर- जीव कभी भी अजीव नहीं हो सकता हैं ?

१६) पाँच संसारी जीवों के नाम बतलाईयें ?

उत्तर- मानव, घोड़ा, हाथी, चिंवटी तथा कबूतर आदि हम सब जीव संसारी जीव हैं ।

१७) पाठशाला के पाँच जीवों के नाम बताइये ?

उत्तर- अध्यापकजी, छात्रगण, सेवक, प्राचार्य, लिपिक आदि ये पाठशाला में रहते हैं।

१८) बाजार के पाँच जीवों के नाम बताईये ?

उत्तर- बैल, बकरा, मुर्गी, विक्रेता, क्रेता बाजार में पाये जाते हैं।

१९) रसोईघर के पाँच जीवों के नाम बतलाईये।

उत्तर- कुक(रसोईयाँ), बिल्ली, चुहा, मक्खी, पोंछा लगानेवाली बाई इत्यादि ।

२०) ड्रॉईंग रुम के पाँच जीवों के नाम बताईये ?

उत्तर- बालक, माँ, जलता हुआ लैम्प, चलता हुआ फैन, पीने का पानी आदिक।

२१) संसारी जीव कहाँ पर रहते हैं, वह क्या करते रहते हैं ?

उत्तर- संसारी जीव संसार में रहते हैं । वह संसारिक कार्योकी उलझनों में उलझे रहते हैं। कुछ सोते रहते हैं।

२२) मनुष्य का शरीर जो दिखाई दे रहा हैं यह जीव हैं की अजीव हैं?

उत्तर- संसारी जीव के शरीर में जब तक चेतनता हैं तब तक जीव हैं और निष्प्राण (मरण) के उपरांत यह शरीर अजीव ही हैं।

२३) जीव का मरण होता हैं या अजीव का मरण होता हैं ?

उत्तर- जीव का कभी भी मरण नहीं होता हैं परंतु जो अजीव हैं उसका परिवर्तन होता हैं (अर्थात दोनो का ही परिवर्तन होता हैं ।)

२४) मरा हुआ आदमी जीव हैं कि अजीव हैं ?

उत्तर- मरे हुए आदमी का शरीर तो निश्चयनय से अजीव हैं ।

२५) बताओ चमड़े का बेल्ट जीव है या अजीव हैं ।

उत्तर- चमड़े कि कोई भी वस्तु जीव ही हैं कयोंकि वह किसी प्राणी का चमड़ा रहा होगा। उसमें प्रति समय उस ही जाति के जीव हमेशा ही उत्पन्न होते रहते हैं। चाहे वह मरण को ही प्राप्त हो जावे परन्तु सुक्ष्मजीव उसमें प्रतिसमय उत्पन्न होते रहतेहैं।

२६) अजीवों से जीव को क्या लाभ होता हैं ?

उत्तर- अजीव से जीवात्मा को कोई लाभ नहीं होता हैं (निश्चयनय) चूंकि लोक में संसारी प्राणी अनेक सुख सुविधा संपन्न होने के लिए अजीव को महत्वपूर्ण मानता हैं यह सब मोह का महात्म्य हैं।

२७) जीव की मुख्य पहचान बतलाईये ?

उत्तर- जो श्वॉस लेता है, जिसे सुख, दुःख होता हैं जो छोटे से बड़ा होता हैं यही इसकी प्रमुख पहचान हैं ।

२८) क्या संसारी जीव दिखाई देते हैं ?

उत्तर- जीव आत्मा नहीं दिखती हैं। परन्तु उनका स्थूल शरीर का पिण्ड दिखता हैं ।

२९) बताओं माँ के गर्भ में आया हुआ बच्चा जीव हैं ?

उत्तर- हाँ, माँ के पेट मे आया हुआ गर्भस्थ बच्चा जीवात्मा ही होता हैं।

३०) भगवान श्री जी की प्रतिमा जी (प्रतिबिंब) वह जीव हैं की अजीव हैं ?

उत्तर- भगवान का बिंब सजीव नहीं हैं, वह अजीव हैं ।

३१) बताओ बाल एवं नख यह जीव हैं या निर्जीव हैं ?

उत्तर- बाल तथा नख मनुष्य के शरीर में जब तक हैं तब तक तो जीव हैं और उनके निकालने पर अजीव हो जाते हैं।

३२) अजीव की मुख्य पहचान बतलाइए ?

उत्तर- जो हमें इन्द्रियों से दिखाई देवे तथा जो ना जीता हैं, ना जीता था, ना जियेगा उसे अजीव कहते है। तथा जिसमें सुख दुःख नहीं होते हैं वही अजीव की स्पष्ट पहचान हैं ।

३३) क्या जीव निर्जीव हो सकता हैं ?

उत्तर- जीव आत्मा कभी भी वह अपने गुणधर्म से बदलकर अजीव नहीं हो सकता हैं ।

३४) चौके (रसोईघर) के पांच अजीव वस्तु के नाम बताईये।

उत्तर- चौकी, बेलन, सिगड़ी, थाली एवं कटोरी आदिक ।

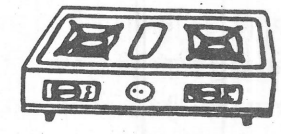

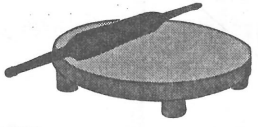

३५) भुंजे हूए चने, मूंगफल्ली जीव हैं क्या ?

उत्तर- यह दोनों निर्जीव है क्योंकी उन्हे अग्नि पर पका दिया तो वह जीवों से रहित ही होते हैं। उनमें पुनः उगने (अंकुरित) होने की शक्ति नहीं होती हैं।

३६) बताओ दाल रोटी जीव हैं ?

उत्तर- दाल, पुडी, रोटी यह सब अजीव हैं परन्तु कुछ सीमा के उपरान्त उसमें भी जीव उत्पन्न हो जाते हैं ?

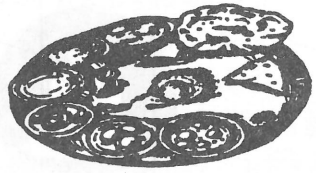

३७) मुनक्का - द्राक्षी (किसमिस) जीव हैं या निर्जीव हैं?

उत्तर- मुनक्का आदिक बीज सहित होने सजीव ही होते हैं। उनके (बीजों से) रहित होने पर वह निर्जीव होते हैं।

स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर जिन मंदिरजी में प्रभु के दर्शन नित्य प्रतिदिन करों।

"बिना पूछे किसी की चीज मत उठाओं"

पाठ
६
छठवाँ

मुक्त जीव

३८) मुक्त जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर- जो द्रव्य कर्मोके साथ शरीर एवं रागद्वेष से रहित होते हैं वही मुक्त जीव हैं ।

३९) बताओ मुक्त जीव श्रेष्ठ है कि संसारी श्रेष्ठ हैं ?
उत्तर- मुक्त जीव ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं, संसारी नहीं।
४०) बताओ तुम संसार से मुक्त हो सकते हो ?
उत्तर- हाँ हम भी समीचीन मोक्ष मार्ग पर चले तो संसार से मुक्त भी हो सकते हैं ।
४१) मुक्त जीव को हम इन आँखों से देख सकते हैं ?
उत्तर- उन सिद्ध जीवों को हम आँखो से नही देख सकते हैं, चूकिं वह समस्त कर्मोसे रहित होते हैं ।
४२) मुक्त जीव संसार में फिर कभी आते हैं ?
उत्तर- मुक्त जीव पुनः कभी भी संसार में नहीं आते हैं वह तो हमेशा को संसार से छूट गये होते हैं ।
४३) मुक्त जीव क्या कार्य करते हैं ?
उत्तर- मुक्त जीव समस्त करने योग्य कार्य कर चुके और अब वह जानते ही हैं और कुछ नहीं करते हैं।
४४) मुक्त जीव कौन से परमात्मा हैं ?
उत्तर- मुक्त जीव सिद्ध परमेष्ठी वह निकट परमात्मा है
४५) मुक्त जीव (सिद्ध परमेष्ठी) निर्जीव हैं कि जीव हैं।

उत्तर- वह मुक्त जीव निर्जीव नहीं शुद्ध जीव होते हैं ।
४६) मुक्त जीव कहाँ पर रहते हैं ?
उत्तर- मुक्त जीव लोक के अग्रभाग में सिद्धशिला पर रहते हैं।
४७) मुक्त जीवों के दस नाम बतलाओ ?
उत्तर- श्रीराम, श्री हनुमान, श्री सुग्रीव जी, श्री कुलभूषण जी,श्रीधर स्वामी, जम्बूस्वामी, गुरुदत्त स्वामी जी, देशभूषण जी, गौतम स्वामी जी, महावीर स्वामी जी ।
४८) उत्पन्न होने वाले जीव संसारी है या मुक्त जीव हैं ?
उत्तर- जन्म धारण करने वाले सभी जीव संसारी ही होते हैं।
४९) मरण को प्राप्त होने वाले जीव मुक्त जीव होते हैं ?
उत्तर- मरण को प्राप्त होने वाले जीव भी संसारी जीव ही होते है मुक्त जीव नही हैं ।
५०) बताओ मुक्त जीव संसार में फिर कब आकर जन्म लेते है?
उत्तर- मुक्त जीव पुनः संसार में कभी नही आते हैं जैसे एक बार दूध दही से घी बनाने पर पुनः वह दूध दही नही बन सकता हैं। वैसे ही भगवान पुनः जन्म नहीं लेते है।
५१) स्वर्ग के देव देवी संसारी जीव है या मुक्त जीव हैं ?
उत्तर- स्वर्ग के देवी देवता भी संसारी ही जीव होते हैं उनके भी राग, द्वेष, मोह, जन्म, मरण होते हैं।
५२) क्या सोता हुआ व्यक्ति संसारी जीव हैं कि मुक्त हैं?
उत्तर- सोता हुआ व्यक्ति संसारी जीव ही हैं ।
५३) बताओ यदि जीवन न होता तो क्या होता ?
उत्तर- यदि जीवन न होता तो कुछ भी सुख, दुःख, ज्ञान आदिक कुछ भी नही होते।
५४) बताओ सजीव बोलता हैं कि निर्जीव बोलता हैं ?
उत्तर- सजीव ही बोलता चलता फिरता हैं, निर्जीव नहीं ।
५५) बताओ संसारी जीव शरीर एवं श्वॉस से रहित होता हैं वह कौन सी दशा होती हैं ?
उत्तर- हाँ, जब जीव शरीर और श्वॉस से रहित होता वह हैं विग्रह गति में मरण करके दूसरे शरीर धारण करने की अवस्था विशेष रहती हैं।

"सदा सत्य बोलो"

पाठ ७ सातवा

जीव के भेद (स्थावर)

५६) संसार में जीव कितने तरह के होते है ? नाम बताओ।

उत्तर- वैसे तो संसारी जीव अनेक तरह के होते हैं परन्तु मुख्य रुप से वह दो प्रकार। (१) स्थावर जीव (२) त्रस जीव के भेद से जानते हैं।

५७) स्थावर जीव किसे कहते है ?

उत्तर- जिनके मात्र एकेन्द्रिय होवें जो चल फिर ना सकें, उत्पन्न होवें, मरें तथा जिन के स्थावर नाम कर्म होवें वह स्थावर जीव कहे गये है।

५८) स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- स्थावर जीव पांच प्रकार के होते हैं वह समूह में ही रहते है।

५९) स्थावर जीवों के अलग अलग नाम बतलाईयें ?

उत्तर- पृथ्वी-कायिक, जल-कायिक, अग्नि-कायिक, वायु-कायिक, वनस्पति-कायिक, यह पांच भेद है।

६०) पृथ्वी कायिक जीव किन्हे कहते है ? उनके उदाहरण बताइये।

उत्तर- पृथ्वी ही जिनका शरीर होवे उन्हे पृथ्वीकायिक जीव कहते है, जैसे मिट्टी, पत्थर, सोना, चांदी, धूल इत्यादि ।

६१) जलकायिक जीव किसे कहते है ? उनके कुछ उदाहरण बताइये ?

उत्तर- जल ही जिसका शरीर हो उन्हे जलकायिक जीव कहते है। जैसे - ओस, पानी, बर्फ, झरने का बहता पानी।

६२) अग्नि कायिक जीव किसे कहते हैं ? उनके कुछ उदाहरण बतलाइये ।

उत्तर- अग्नि ही जिनका शरीर हो उन्हें अग्नि-कायिक जीव कहते है। जैसे - दीपक की लौ, आग, अंगारा, चिनगारी, जलती हुई लाईट।

६३) वायु कायिक जीव किसे कहते है ? उसके कुछ उदाहरण बतलाइये ।

उत्तर- वायु ही जिनका शरीर होवे उन्हे वायु कायिक जीव कहते है। जैसे - हवा, तूफान, आंधी, ऑक्सीजन, चलते हुए फैनकी हवा।

६४) वनस्पति-कायिक जीव किसे कहते है ? उन्हे उदाहरण सहित बतलाइये ?

उत्तर- वनस्पति ही जिनका शरीर होता है उन्हे वनस्पति कायिक जीव कहते है।

जैसे - वृक्ष, घास, जड़, बीज, सेवाल आदिक अनेक प्रकार के सुमन (फूल) होते हैं।

६५) इन पांचो स्थावर जीवों से मनुष्य को कौन सा कायिक लाभदायक हैं ?

उत्तर- समस्त स्थावर एक सीमा तक मनुष्य को लाभ दायक हैं। अथवा कष्टदायक भी होते हैं ।

६६) पांचो स्थावरो में सर्वाधिक उपयोगी कौनसा कायिक होगा ?

उत्तर- सर्वाधिक उपयोगी पांचो स्थावरों में वायुकायिक ही होना चाहिए। क्योंकी वह मानव को प्राण-वायु प्रदान करता है।

६७) पांचो स्थावरो से मानव को सामान्य रुप से क्या लाभ होते हैं ?

उत्तर- पांचो स्थावरो से वातावरण संतुलित रहता हैं और प्रदूषण नहीं रहता। इससे चारों और सर्वत्र खुश हाली बनी रहती हैं।

६८) बहुत दिन के आचार में (खटाई) कौनसे जीव रहते हैं?

उत्तर- बहुत दिन के आचार में स्थावर जीव तो रहते ही हैं परंतु उसमें त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं। जो सफेद फफुंद देखने में आते हैं । वह त्रस जीव हैं।

६९) दो दिन से रखे हुए दही में कौन से जीव रहते हैं ?

उत्तर- दो दिन से रखे हुए दही में नियम से त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं ।

७०) आलू, अद्रक, मुली, गाजर, जमीकंद में कौनसे जीव रहते हैं ?

उत्तर- इनमें स्थावर अनंत कायिक निगोदिया जीव रहते हैं । क्योंकि यह सब जमीन/ भूमि के भीतर होते हैं, उनमें सूर्यप्रकाश नहीं लगता हैं सो वह निगोदिया जीवों का पिण्ड कहा गया हैं।

७१) आग, बिजली, ओस, ओला त्रस जीव होते हैं या स्थावर जीव हैं ?

उत्तर- आग, बिजली, ओस, ओला इत्यादिक स्थावर ही जीव होते हैं ।

७२) स्थावर जीव कहाँ कहाँ पर पाये जाते हैं ?

उत्तर- स्थावर जीव समस्त ब्रह्माण्ड में पाये जाते हैं ।

७३) नीचे में से कौन कौन से जीव एकेन्द्रिय जीव हैं ?

देव-नारकी, मनुष्य, घोड़ा, पेड़, पौधे, ओस, बर्फ, पत्थर, जामुन, सिंघाडे, कमलगटा, मक्खी, मच्छर, भौंरा।

उत्तर- मक्खी, मच्छर, भौंरा, देव-नारकी, मनुष्य, घोड़ा इनको छोड़कर समस्त एकेन्द्रिय जीव हैं।

७४) फ्लॅटों (घर) में रहने वाले कितने एकेन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर- घर में पाँचो प्रकार के एकेन्द्रिय जीव रहते हैं ।

७५) वनस्पति कायिक जीव घर में कहाँ पर रहते हैं ?

उत्तर- वनस्पति कायिक जीव घर के बाहर बगीचे में, गमलें मे पाये जाते हैं।

७६) क्या पाँचो स्थावर जीवों की वृद्धी होती हैं ?

उत्तर- हाँ, समस्त स्थावर जीवों की वृद्धी होती हैं।

७७) एकेन्द्रिय जीव कर्म वर्गणाओं को ग्रहण करते हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय समस्त संसारी जीव कर्म वर्गणाओं को ग्रहण करते हैं और छोड़ते रहते हैं।

७८) क्या एकेन्द्रिय जीव पंचेन्द्रिय बन सकते हैं ?

उत्तर- हाँ, समस्त संसारी जीव विशुद्ध भाव परिणामों के द्वारा पंचेन्द्रिय भी हो सकते हैं ।

७९) क्या स्थावर जीव श्वॉस लेते हैं ?

उत्तर- समस्त स्थावर जीव श्वॉस लेते हैं और छोड़ते भी हैं।

८०) क्या समस्त स्थावर जीव बाजार से खरीद सकते हैं ?

उत्तर- नहीं, यह पाँचो स्थावरो को बाजार से नहीं खरीद सकते हैं।

८१) क्या स्थावरो को मनुष्य खाते पीते हैं ?

उत्तर- पांचो स्थावरो का उपयोग मनुष्य करता हैं इसलिए मनुष्य को जीने के लिए भोजन करना चाहिए, भोजन करने के लिए नहीं जीना चाहिए।

८२) निगोदिया जीव त्रस होते या स्थावर होते हैं ?

उत्तर- निगोदिया जीव स्थावर ही होते हैं, त्रस नहीं हैं ।

८३) स्थावर जीवों के और भी कोई भेद हैं क्या ?

उत्तर- स्थावर जीवों के दस भेद भी कहे हैं ।
सूक्ष्म जीव - पृथ्वी-कायिक, जल-कायिक,
अग्नि-कायिक, वायु-कायिक, वनस्पति-कायिक।

बादर जीव - पृथ्वी कायिक, जल-कायिक,
अग्नि कायिक, वायु-कायिक, वनस्पति-कायिक।

८४) निगोदिया जीव कौन से कायिक होते हैं ?

उत्तर- निगोदिया जीव स्थावरों में वनस्पति कायिक होते हैं ।

८५) स्थावर जींवो से मनुष्य को क्या लाभ हैं ?

उत्तर- स्थावर जीव प्रकृति का संतुलन बना कर संसार में सबको लाभ देकर सुख प्रदान करते हैं ।

८६) क्या स्थावर जीव महान होते हैं या त्रस जीव ?

उत्तर- जीवों की दृष्टि से समस्त संसारी जीव समान होते हैं ।

८७) घर(फ्लैट) के पाँच स्थावर जीवों के नाम बतलाइये?

उत्तर- नीम का झाड़, लॉन, रसोई में जलती अग्नि, पानी, फूल वगैरह।

८८) दुकान के पांच स्थावर जीवों के नाम बताओं ?

उत्तर- चलता हुआ फैन, भूमि, आईस्क्रीम और जलती हुई लाईट, नींबू आदिक।

८९) मन्दिर जी के कुछ स्थावर जीवों के नाम बताओ ?

उत्तर- टंकी का पानी, जलता हुआ दीपक, बहती हुई वायु, शिखर पर लगे हुए पौधे, मंदिर का आंगन।

९०) खाने का नमक त्रस जीव हैं या स्थावर ?

उत्तर- नमक स्थावर जीव ही होते हैं ।

९१) क्या सेंधा नमक एवम् लवण समुद्र का नमक स्थावर जीव हैं ?

उत्तर- यह दोनों पृथ्वी तथा जल से उत्पन्न होने के कारण स्थावर जीव ही हैं ।

९२) बताओ क्या त्रस होना श्रेष्ठ हैं या स्थावर जीव होना?

उत्तर- त्रस जीव होना ही सर्व श्रेष्ठ हैं ।

९३) क्या स्थावर जीव इन्द्रिय के माध्यम से हमारे पकड़ में आते हैं ?

उत्तर- स्थावर जीव इन्द्रियों के माध्यम से पकड़ में नही आते । उनका समूह देखने में आता हैं। परंतु वह जीव पकड़ में नहीं आते हैं।

९४) क्या त्रस जीवों के घात करने से पाप होता हैं या स्थावरो के घात करने से पाप होता हैं ?

उत्तर- यदि जीवों को कष्ट देने का भाव रहेगा तो दोनों के घात करने से पाप होता हैं।

हल्का	-		रूई
भारी	-		लोहा
रुखा (खुरदरा)	-	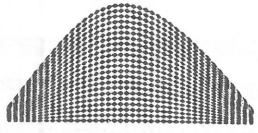	रेती
चिकना	-		दर्पण
ठंडा	-	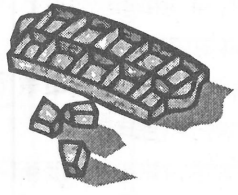	वर्फ
गर्म	-		अग्नि
कड़ा	-		लोहा
नरम	-	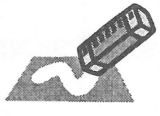	रबर

९५) लोक में यदि स्थावर जीव हैं तो उनका खान पान में उपभोग क्यों किया जाता हैं ?

उत्तर- मनुष्य एवं पृथ्वीपर रहनेवाले समस्त प्राणीयों का जीवन रोटी, कपड़ा, मकान इन तीन माध्यम से ही चलता हैं। यह समस्त स्थावर के माध्यम से प्राप्त होते हैं। उनके पास अंगोपांग नाम के शरीर नहीं होते हैं, एवम् उनके उपयोग करने के लिए वनस्पति को पूर्ण रुप से तोड़ा मरोड़ा भी नही जाता। जितना आवश्यक है उतना ही व्यक्ति ले लेता है। (जैसे किसी व्यक्ति को आम खाना है तो वह जितने आम आवश्यक हैं तो उतने ही तोड़ता हैं या खरीदता हैं । उसके लिए संपूर्ण पेड़ को नहीं काटते है।) यही कारण हैं स्थावरों का उपभोग करते हैं।

९६) बताओ संसार में स्थावर जीव अधिक होते या त्रस जीव अधिक हैं ?

उत्तर- संसार में स्थावर जीव ही सर्वाधिक होते हैं त्रस जीव तो बहुत ही कम हैं ।

९७) क्या स्थावर जीवों को ज्ञान रहता हैं ?

उत्तर- इन जीवों को भी अपनी योग्यता के अनुसार ज्ञान अवश्य ही होता हैं। बिन ज्ञान के कोई भी जीवन नहीं रहता हैं।

९८) पृथ्वी को किस प्रकार का ज्ञान होता है ?

उत्तर- पृथ्वी को भी आठ प्रकार का ज्ञान होता हैं । जैसे-हल्का, भारी, ठंडा, गरम, रुखा, चिकना, कड़ा, नरम।

९९) क्या पानी को भारी और नरम का भी ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- हाँ, जल को भारी और नरम का भी ज्ञान होता हैं।

१००) बताओ क्या वनस्पति को रुक्ष, चिकने पदार्थोका ज्ञान होता है ?

उत्तर- हाँ, वनस्पति कायिक जीवों इनका स्पर्शजन्य ज्ञान होता हैं।

१०१) क्या वायु को ठंडे, गरम का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- वायु कायिक जीवों को भी ठंडे गरम आदि का भी ज्ञान होता है।

१०२) हरा-भरा चने का पौधा और गेहूँ स्थावर जीव क्यों है?

उत्तर- इनके पास श्वास-उछ्वास, एवं छोटेसे बड़े होने की क्षमता होती हैं इसी कारण वह स्थावर जीव हैं।

१०३) पाँचो स्थावर संसारी जीव है कि मुक्त जीव हैं ?

उत्तर- यह सारे स्थावर संसारी जीव ही हैं ।

१०४) छने हुए उबलते हुए जल में कौन से जीव पाये जाते हैं?

उत्तर- उबलते हुए जल में त्रस जीव नहीं होते हैं, स्थावर ही पाये जाते हैं।

१०५) स्थावर जीवों का आरोग्य बिगड़ता हैं ?

उत्तर- हाँ। इन जीवों का भी आरोग्य ठंडी गर्मी एवं बरसात से बिगड़ता (विकृत) हुआ देखा जाता हैं ।

१०६) शकरकन्द में या जमीकंद में कौन से जीव रहते हैं ? उनसे क्या हानि हैं ?

उत्तर- कन्दों मे स्थावर अनंतकाय निगोदिया जीव ही रहते हैं । उनसे अनेक प्रकार के रोगों की संभावना बनी रहती हैं। इनके खाने से मोटापा भी बढता है।

१०७) स्थावर जीव कहाँ कहाँ पर रहते हैं ?

उत्तर- पांचो स्थावर जीव समस्त जगह पर पाये जाते हैं ।

१०८) हरे भरे पेड़ एवं पुष्प में कौन से जीव होते हैं ?

उत्तर- हरे भरे पेड़ पौधे तो स्थावर जीव हैं परन्तु उनके अंदर त्रस जीव, चार इंद्रिय तक पाये जाते हैं ।

१०९) पटाखों में कौन से जीव होते हैं ?

उत्तर- पटाखे तो अजीव हैं, उनमे कोई जीव नहीं हैं ।

११०) पटाखे निर्जीव है परन्तु उन्हें चलाने, फोड़ने को क्यो सज्जन लोग मना करते हैं ?

उत्तर- उनके अंदर भरी हुयी बारुद से उनमें अग्नि के माध्यम से जोरदार धमाका होता हैं, जिससे स्थावर जीव उत्पन्न होकर अन्य वातावरण के त्रस, पंचेद्रिय जीवों का भी विघात होते हुए देखा जाता हैं। इसलिए उन्हे नहीं चलाना चाहिए।

१११) क्या हम इन्द्रियों से स्थावर जीवों को देख सकते हैं ?

उत्तर- इन्द्रियों से तो उनका ज्ञान नहीं होता परन्तु (आगम के द्वारा) उनके समुह को देखते हैं। जो अरहन्त भगवान ने बताया हैं।

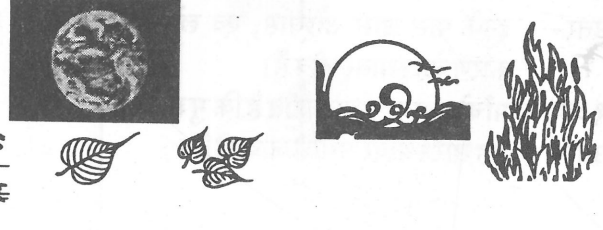

त्रस जीव

११२) त्रस जीव किन्हे कहते है ?

उत्तर- जिनके पास दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ होती हो, जो चलते फिरते, डरते भागते हो तथा जिनके अँगोपाँग नाम कर्म होवे उन्हें त्रस जीव कहते है।

११३) त्रस जीव की पहचान बतलाईये ?

उत्तर- जो सर्दी गर्मी से बचने का प्रयास करते हैं तथा जिनके मुँह, आँखे, कान आदि हो यही त्रस जीव की पहचान हैं।

११४) त्रस जीवों के भेद बतलाइए ?

उत्तर- त्रस जीव चार प्रकार के होते हैं।

(अ) दो इन्द्रिय त्रस (ब) तीन इन्द्रिय त्रस

(स) चार इन्द्रिय त्रस (ड) पांच इन्द्रिय त्रस

११५) तपोवन एक्सप्रेस रेलगाड़ी के पाँच त्रस जीव के नाम बतलाइए ?

उत्तर- इंजिन चालक, गार्ड, प्रवासी/यात्री टिकट चेकर, मक्खि।

११६) खेत खलिहान के पांच त्रस जीवों के नाम बताओ ?

उत्तर- बैल, कबूतर, तोते, लट, तितलीयाँ आदिक।

११७) हॉस्पिटल के पांच त्रस जीवों के नाम बताओ ?

उत्तर- डॉक्टर, रोगी, नर्स कम्पोडर, मच्छर आदिक

११८) क्या त्रस जीवों को भी हमारे समान सुख दुःख होता है ?

उत्तर- हाँ त्रस जीवों को भी हमारे समान सुख दुःख होता है, क्योंकि वह भी संसारी कर्म युक्त जीव होते है।

११९) क्या बहता हुआ पानी त्रस जीव हैं या स्थावर जीव हैं?

उत्तर- बहता हुआ पानी तो स्थावर ही है परन्तु उसमें त्रस जीव भी मछली मच्छ शंख सीप आदिक रहते हैं।

१२०) मुर्गी एवं उसका अण्डा कौन से जीव हैं ?

उत्तर- मुर्गी एवं उसके अण्डे त्रस जीव ही हैं वह स्थावर नहीं होते हैं।

१२१) बताओ भगवान दादा जी का चित्र, त्रस या स्थावर जीव है ?

उत्तर- वह ना तो त्रस जीव हैं ना स्थावर जीव है। नियम से चित्र अजीव ही है।

१२२) चलती हुई बैलगाड़ी त्रस जीव हैं या स्थावर है ?

उत्तर- गाड़ी तो लकड़ी ही होती है इसलिए वह अजीव हैं परन्तु उसको चलाने वाले बैल त्रस जीव हैं।

१२३) क्या बेहोश या सोता हुआ व्यक्ति अजीव हैं कि स्थावर ?

उत्तर- उपरोक्त दोनों ना होकर त्रस जीव ही हैं।

१२४) बिनछने हुए पानी में त्रस जीव होते या स्थावर ?

उत्तर- अनछने हुए पानी में त्रस एवं स्थावर दोनों तरह के जीव रहते हैं । इसलिए अनछना पानी कभी नहीं पीना चाहिए।

१२५) क्या जलते हुए गैस में त्रस जीव है कि स्थावर जीव होते है?

उत्तर- जलते हुए गैस के चुल्हें में स्थावर जीव होते हैं ।

१२६) अच्छे से छाँनकर के उबाला हुआ जल में त्रस हैं या स्थावर जीव रहते हैं ?

उत्तर- विधीपूर्वक प्रासुक किये हुए जल में चौबीस घंटे तक कोई जीव नहीं रहते हैं।

१२७) जल को छाँनकर के कौन से जीवों को बचाया जाता हैं।

उत्तर- जल को गालन करके त्रस जीवों को बचाया जाता है।

१२८) प्रक्षेपास्त्र छोड़ने पर कौन से जीव होते हैं ?

उत्तर- प्रक्षेपास्त्र छोड़ने पर स्थावर जीव (अग्निकायिक) होते हैं।

१२९) आचार्य, देव स्थावर हैं या त्रस जीव है ?

उत्तर- आचार्य एवं देव त्रस पंचेन्द्रिय जीव ही होते हैं ।

१३०) पटरी पर दौड़ती हुयी रेलगाड़ी त्रस हैं या स्थावर जीव?

उत्तर- वह दौड़ती हुई रेलगाड़ी अजीव हैं ।

१३१) बहुत देर से रखे हुए दुध में कौन से जीव उत्पन्न हो जाते हैं ?

उत्तर- बहुत देर से निकाल कर रखे हुए दूध में उसी जाति के त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं ? (यदि तुरंत छान कर गर्म किया तो जीव नहीं रहते हैं।)

१३२) जुँ, केंचुए एवं मच्छर कौनसे जीव है ?

उत्तर- जुँ, केंचुए, मच्छर त्रस जीव ही है स्थावर नहीं होते।

१३३) मछली और मांस का पिंड में कौनसे जीव होते हैं ?

उत्तर- मछली और मांस के पिंड में त्रस पंचेन्द्रिय जीवों का ही संबंध रहता हैं, स्थावर नहीं ।

१३५) दस संसारी जीवों के नाम बतलाइए ?

उत्तर- मनुष्य, देव, नारकी, स्त्री, शंख, बिच्छु, मछली, हाँथी, मोर, छिपकली आदिक।

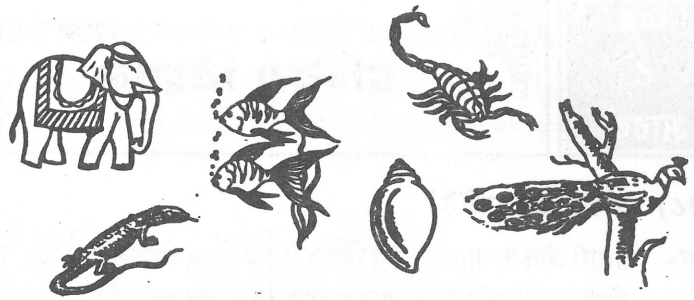

१३६) क्या मोक्ष (सिद्धशिला) पर स्थावर जीव रहते है ?

उत्तर- हाँ, मोक्ष पर सुक्ष्म निगोदिया (स्थावर) जीव भी पाये जाते हैं।

* समय का मुल्य *

एक वर्ष का मूल्य	-	फेल होने वाले विद्यार्थी से पुछों।
एक माह का मूल्य	-	समय से पूर्व जन्म देने वाली माँ से पूछों।
एक सप्ताह का मूल्य	-	पत्र की साप्ताहीकी लिखनेवाले पत्रकार सें पूछों।
एक दिन का मूल्य	-	प्रतिदिन कमाकर खाने वाले मजदूर से पूछों।
एक घंटे का मूल्य	-	पढ़ने वाले दो विद्यार्थीयों से पूछों।
एक मिनिट का मूल्य	-	स्टेशन पर गाड़ी छूट जानेवाले यात्री से पूछों।
एक सेकण्ड का मूल्य	-	दुर्घटना में बचते हुए मुसाफिर से पूछों।
एक मिलीसेकण्ड का मूल्य	-	ओलंपिक की स्पर्धा में भाग लेकर स्वर्णपदक हारनेवाले से पूछों।

पाठ
८
आठवाँ

इन्द्रिय विज्ञान

१३८) इन्द्रिय किसे कहते है ?

उत्तर- संसारी जीव के बाह्य पहचान विशेष के चिन्ह एवं जिसके द्वारा छूने, चखने, सूँघने देखने एवं सुनने का ज्ञान होता हैं उसे इन्द्रिय कहते हैं।

१३९) इन्द्रियाँ किसके पास होती हैं ?

उत्तर- इन्द्रियाँ संसारी जीवों के पास होती हैं ।

१४०) इन्द्रियों के कितने प्रकार के भेद हैं ? उनके नाम बताओ?

उत्तर- इन्द्रियों के पांच भेद होते हैं ।

(अ) स्पर्शन (आ) रसना (इ) घ्राण

(ई) चक्षु (उ) श्रोत्र ।

१४१) पांचो इन्द्रियों के पर्याय वाचक नाम बताओं ?

उत्तर- (अ) शरीर (त्वचा) (आ) जीभ (जिव्हा)

(इ) नासिका (नाक) (ई) नेत्र (आँख)

(उ) कर्ण (कान) यह पर्यायवाची नाम हैं।

१४२) क्या संसारी जीव इन्द्रियों से पकड़ में आते हैं ?

उत्तर- संसारी जीव इन्द्रियों के माध्यम से पकड़ में नहीं आते बल्कि उनका स्थूल शरीर ही इन्द्रियों से पकड़ में आता है।

गुरुजन की भक्ति-विनय भाव में सदा तत्पर रहो।

१४३) सबसे प्रथम कौन सी इन्द्रिय होती हैं ? उसका लक्षण बताओ ?

उत्तर- सर्व प्रथम स्पर्शन इन्द्रिय होते हैं, जिसके माध्यम से हल्का, भारी, रुखा, चिकना, कड़ा, नरम और ठंडे गरम का स्पर्शजन्य ज्ञान होता हैं ।

१४४) कपास (रुई) को हाथ में लेने से कितने प्रकार का स्पर्शजन्य अनुभव होता हैं?

उत्तर- कपास को हाथ में लेने पर कोमल (नरम), हल्का, एवं चिकनाहट का अनुभव होता हैं ।

१४५) कांच के छूने से किस प्रकार का स्पर्श होता हैं ?

उत्तर- कांच (दर्पण) को छूने से कड़ा , ठंडे/गरम, एवं चिकनाहट एवं भारी का ज्ञान होता हैं ।

१४६) किस इन्द्रिय से आठों प्रकार के स्पर्श का ज्ञान होता हैं?

उत्तर- शरीर के माध्यम से ही आठ प्रकार का स्पर्शजन्य ज्ञान होता हैं।

१४७) क्या बिना स्पर्श के वस्तु को जान सकते हैं ?

उत्तर- हाँ, बिना स्पर्श के भी अन्य इन्द्रियों से भी वस्तु को जाना जा सकता हैं ।

१४८) पांच कम वजनवाली (हल्की) वस्तु के नाम बताओ?

उत्तर- कपास, मुरमुरे, थर्माकोल, मोर के पंख, नीम के सुखे पत्ते आदिक ।

१४९) इस संसार में पांच भारी वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- पथ्थर, सीमेंट, लोहा, चांदी जस्ता आदिक।

१५०) चिकने पांच पदार्थोके नाम बताओं ?

उत्तर- मक्खन, घी, तेल, सेवाल (काई), बेसन पीठ आदिक ।

१५१) संसार की रुक्ष वस्तु के नाम बताओ ?

उत्तर- रेती, सीमेंट का रोड, ज्वार की रोटी, सुखी लकड़ी आदिक।

१५२) विश्व की पांच ठंडी वस्तुओं के नाम बताओं ?

उत्तर- बर्फ, चंदन, स्प्रिट, कूलर की हवा, मटके का ठंडा जलादिक।

१५३) संसार की पांच तप्त वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- जलता हुआ लक्कड, हीटर, गीजर का पानी, गॅस बत्ती, दीपक आदिक ।

१५४) संसार की पांच कड़ी (ठोस) वस्तु के नाम बताओ ?

उत्तर- दीवार, लोहे का खंबा, पथ्थर, वृक्ष का तना, फर्श।

१५५) पांच संसार की नरम वस्तुओं के नाम बताओं ?

उत्तर- बेल, लताएँ, फूल, गादी, मखमल आदिक।

१५६) स्कूल में बच्चे किस इन्द्रिय से पिटते हैं ?

उत्तर- बच्चे स्कूल में स्पर्शन इन्द्रिय से पिटते हैं ।

१५७) जल एवम् हवा का स्पर्श कैसा होता हैं ?

उत्तर- जल एवं हवा का स्पर्श जैसे वातावरण रहेगा वैसा होता हैं (ठंडा या गरम)।

१५८) बताओ आँखो में लाल मिर्च का पाऊडर जाने पर आंखों से रस का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- आँख में मिर्च का पाऊडर जाने पर रस का ज्ञान नहीं स्पर्शजन्य अनुभव होता है।।

१५९) दूसरी इन्द्रिय कौनसी हैं ? उसका लक्षण बताओ ?

उत्तर- रसना इन्द्रिय दूसरी हैं, जिसके द्वारा रसों (स्वाद) का ज्ञान होता हैं ।

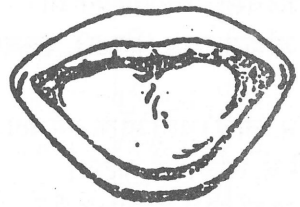

१६०) रसनेन्द्रिय से कितने प्रकार के रसों का ज्ञान होता हैं?

उत्तर- रसना इन्द्रिय से खट्टा, मीठा, कड़वा चरपरा तथा कषायले का ज्ञान होता हैं।

१६१) रसों को कौन सी इन्द्रिय विषय बनाती हैं ?

उत्तर- रसों को द्वितीय इन्द्रिय ही विषय बनाती हैं ।

१६२) नींबू को चखने से कौनसे रस का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- नींबू को चखने से खट्टे का ज्ञान होता हैं ।

१६३) खट्टे पांच वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- इमली, कच्चा आम, (कैरी) दही, करौंदे, अचार।

१६४) संसार की पांच मीठी वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- शक्कर, पका आम, पेडा, चिक्कु, मुनक्का आदिक।

१६५) कड़वी पांच वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- करेला, नीम के पत्ते, कुनेन, मेथी दाना, गुरवेल ककड़ी आदिक।

१६६) नीम की दाँतोन करने से कौन से रस का ज्ञान होता हैं?

उत्तर- नीम की दाँतोन करने से कड़वे रस का ज्ञान होता हैं ।

१६७) आंवले को चखने से कौन से रस का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- आंवले को चखने से कषायले पने का ज्ञान होता है।

१६८) नमक कौन सा रस हैं ?

उत्तर- नमक को आचार्यों ने मधुर रस में लिया हैं , जिसमें मीठा तथा खारा दोनों ग्रहण किये जाते हैं।

१६९) जगत के पांच कषायले वस्तुओं के नाम बताओ ?

उत्तर- फिटकरी (तुरटी), आँवला, हरड (हिरडा), कच्चा अनार, कच्चा जामुन आदिक।

१७०) जगत की पांच चिरपरे (तीखे) वस्तुओं के नाम बताओ?

उत्तर- लवंग, सौंठ कालीमिर्च, लाल मिर्च, चटनी।

१७१) गन्ना मीठा हैं यह किस इन्द्रिय से जाना जाता हैं ?

उत्तर- गन्ना मीठा हैं यह रसनेन्द्रिय के द्वारा चखने से / खाने से जाना जाता है।

१७२) संसार में ऐसी कौन सी इन्द्रिय हैं जिसके कारण दो प्रकार का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- द्वितीय इन्द्रिय के द्वारा रसों एवं बोलने का दो प्रकार का उपयोग होता है।

१७३) किसी का भी सम्मान व प्रशंसा कितने इन्द्रिय द्वारा करते हैं?

उत्तर- किसी का भी सम्मान व प्रशंसा स्पर्शन तथा रसेन्द्रिय एवम् मन के द्वारा करते हैं।

१७४) मन किसके पास रहता हैं ?

उत्तर- मन संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के पास होता है।

१७५) मुनक्का का स्पर्श एवं रस बतलाइये ?

उत्तर- मुनक्का का स्पर्श मुलायम तथा रस मीठा रहता हैं ।

१७६) रुई से धागा किस इन्द्रिय से बनाते हैं ?

उत्तर- धागे को स्पर्श इन्द्रिय के द्वारा ही कातते / बनाते हैं।

१७७) भगवान की पूजा / भक्ती किस इन्द्रिय से करते हैं ?

उत्तर- भगवान की पूजा / भक्ती मन पूर्वक समस्त इन्द्रियों से करते हैं तब ही हमारा मन शान्त रहता हैं।

१७८) क्या रसनेन्द्रिय स्पर्श को जानती हैं ?

उत्तर- हाँ, रसनेन्द्रिय स्पर्श को भी जानती है।

१७९) संतरे की गोली खाते समय कितनी इन्द्रियों सम्बन्धी ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- संतरा गोली को हाथ में लेने पर कड़ी, भारी, मुँह में डालने पर खट्टी, मीठी चिकने एवं कलर का भी ज्ञान होता है।

१८०) साईकल चलाते समय कितने इन्द्रिय का प्रयोग होता हैं?

उत्तर- साईकल चलाते समय स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र इन पाँच इन्द्रियों का प्रयोग होता हैं।

१८१) तृतीय इन्द्रिय कौनसी हैं उसका नाम बताओ ?

उत्तर- तीसरी घ्राण इन्द्रिय कहलाती हैं ।

१८२) इस इन्द्रिय के द्वारा मुख्य रुप से किसका ज्ञान होता हैं?

उत्तर- घ्राण इन्द्रिय के द्वारा सुंघने (गंध) का ज्ञान होता हैं।

१८३) घ्राणेन्द्रिय से कितने प्रकार का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- घ्राणेन्द्रिय से जीवों को सुगंध एवं दुर्गंध दो प्रकार का ज्ञान होता हैं।

१८४) सुगंध एवं दुर्गंध के पर्यायवाची नाम बताओं ?

उत्तर- इन्हे अन्य शब्दों में खुशबु तथा बदबु भी कहते हैं ।

१८५) दीपावली के समय घर में मीठा बन रहा हैं, वहाँ किस प्रकार की गंध आती हैं ?

उत्तर- जब मीठा बनता हो तो वहाँ पर सुगंध ही आती हैं।

१८६) घर के बाहर नाली के पास बैठने पर किस प्रकार का ज्ञान होता है ?

उत्तर- नाली के पास बैठने पर दुर्गंध का ज्ञान होता हैं ।

१८७) क्या नासिका स्पर्श को भी विषय बनाती हैं ?

उत्तर- नासिका स्पर्श को नहीं जानती हैं, वह तो गंध को ही अपने ज्ञान का विषय बनाती हैं।

१८८) चिंटी, चीटा इनके पास आँख ना होने पर भी वे घी या मीठे पदार्थ के पास कैसें पहुँच जाते है ?

उत्तर- इनके पास नेत्र ना होने पर भी नासिका के द्वारा सूँघ करके उसके पास आसानी से पहुँच जाते हैं ।

१८९) रस गंध, स्पर्श का ज्ञान किसको होता हैं ?

उत्तर- इन तीनों संबंधी ज्ञान संसारी प्राणियों को ही होता हैं। मतलब यह कि अजीवों को इन्द्रिय संबंधी ज्ञान नहीं होता।

१९०) संसारी जीवों को स्पर्श से अधिक ज्ञान होता है। या रस के द्वारा ?

उत्तर- स्पर्श से संसारी जीवों को अनुभव, अधिक होता है।

१९१) बताओं संसारी जीव इन्द्रियों से रहित होते हैं ?

उत्तर- संसारी जीव इन्द्रियों से रहित नहीं, नियम से इन्द्रियों से सहित होते हैं ।

१९२) क्या जिसकी नासिका उपर से कट गई हैं ऐसे व्यक्ति को गंध का अनुभव होता हैं ?

उत्तर- जिसकी नासिका उपर से कट गई है वह स्थूल द्रव्य इन्द्रिय कटने पर भी गंध का ज्ञान होता है।

१९३) सुगंधित पांच वस्तुओं के नाम बताओं ?

उत्तर- चमेली का फुल, इत्र, चंदन की माला, देशी घी के पकवान, बगीचे की हवा आदिक।

१९४) दुर्गंधित पांच वस्तुओं के नाम बताओ ?

"प्रशंसा का भूका व्यक्ति साबित करता हैं कि वह योग्यता में कंगाल हैं"

उत्तर- मिट्टी का तेल, गाडी का धुआँ, पटाखों का धुआँ, कटी हुई गाजर घांस की गंध, डामर आदिक।

१९५) क्या सुगंधित पदार्थो से रसों का भी ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- हाँ, होता है। जैसे आम के सुंघने पर रस का भी ज्ञान हो जाता हैं ।

१९६) क्या गंधवाले पदार्थोसे स्पर्शजन्य ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- हाँ गंधवाले पदार्थोसे स्पर्श तो होगा ही इस में कोई संदेह नहीं हैं ।

१९७) प्रथम एवं तृतीय इन्द्रिय से किसको जाना जाता हैं ?

उत्तर- शरीर से स्पर्श को जाना जाता हैं और नासिका से गंध का अनुभव होता हैं ।

१९८) पाँचो इन्द्रिय जीव हैं कि अजीव हैं ?

उत्तर- पाँचो इन्द्रिय अजीव ही हैं । वह तो जीवत्व से रहित हैं । क्योंकि उन्हे सुख दुःख का अनुभव नहीं होता हैं ।

१९९) क्या इन्द्रियाँ आत्मा का ज्ञान कराती हैं ?

उत्तर- इन्द्रियाँ अजीव को तो विषय बनाती हैं परन्तु वह जीव को विषय नहीं बनाती हैं।

२००) इन्द्रियाँ जीव को विषय क्यों नहीं बनाती हैं ?

उत्तर- क्योंकि जीव अमूर्तिक होता हैं इसिलिए इन्द्रियाँ जीव को नहीं पकड़ सकती/विषय नहीं बनाती हैं।

२०१) चौथी कौनसी इन्द्रिय होती हैं ?

उत्तर- चौथी इन्द्रिय चक्षु इन्द्रिय हैं।

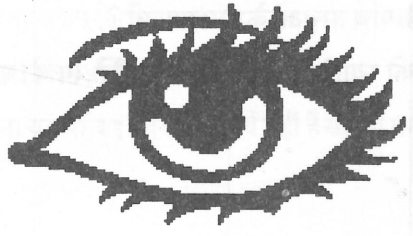

२०२) चक्षु इन्द्रिय से किसका ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- आँखों के द्वारा रँगो का ज्ञान/अनुभव होता है।।

२०३) आँख से कितने रँगो का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- आँख से मुख्य रुप से पांच रंगो का ज्ञान होता हैं।

२०४) उन पाँच रंगो के नाम बताओ ?

उत्तर- काला, पीला, नीला, लाल, सफेद

२०५) उपरोक्त रंग किसमें पाये जाते हैं ?

उत्तर- उपरोक्त रंग संसार की हर वस्तु में पाये जाते हैं ।

२०६) क्या संसार में इन रँगो सिवाय और रंग भी दिखाई देते हैं?

उत्तर- हाँ, इन पांच रंगो के अलावा जगत में अनेक रँगो के मिलाने से भी विभिन्न रंग बनते हैं ।

२०७) सात रंग किसमें होते हैं, वह कैसे जानते हैं ?

उत्तर- सात रंग इन्द्रधनुष में होते हैं वह नेत्र के द्वारा हम सब जानते हैं।

२०८) काले रंग के कुछ वस्तुओं के नाम बतलाइये ?

उत्तर- धूप का छाता, किशोर व्यक्ति के बाल, बोर्ड, काला झंडा, कमण्डलु आदिक।

२०९) पीले रंग के कुछ वस्तुओं के नाम बताओं ?

उत्तर- मंदीरजी के शिखर का कलश, पीतल, सोना, हल्दी, पीले रंग का चॉक आदिक

२१०) नीले रंग के पांच वस्तुओं के नाम बताओं ?

उत्तर- नीले रंग की स्याही, स्वच्छ आकाश, नीले रंग का शर्ट, नील, डिस्टेम्पर आदिक।

२११) लाल रंग की कुछ वस्तुओं के उदाहरण बताओं ?

उत्तर- खून, रेलगाड़ी का सिग्नल, मखमली कीड़े, गॅस की टंकी, फायर ब्रिगेड की गाड़ी आदिक ।

२१२) सफेद रंग के कुछ वस्तुओं के उदाहरण बताओं ?

उत्तर- कोरा कागज, सफेद पेन्ट, चूना, चाँदी, कपास आदिक।

२१३) रंगो को कौन सी इन्द्रिय ज्ञान का विषय बनाती हैं ?

उत्तर- रंगो का विषय सिर्फ नेत्र इन्द्रिय ही बनाती हैं अन्य कोई इन्द्रिय नहीं ।

२१४) दो रंगो को मिलाने से अन्य कौन सा रंग बनता हैं उसका उदाहरण दिजीये ?

उत्तर- नीले और लाल रंग को मिलाने से जामुनी (बैंगनी) रंग बनता हैं ।

२१५) रंगीन चित्रों के कितने रंग होते हैं ?

उत्तर- रंगीन चित्रों में कम से कम पांच रंग होते हैं।

२१६) गाय को दूध में पांचो इन्द्रियों के विषय बताओं ?

उत्तर- दूध गरम हैं यह स्पर्श के द्वारा, मीठा हैं यह रसना के द्वारा, सफेद हैं यह नेत्र के द्वारा, सौंधापन यह नासिका के द्वारा, जब दूध उबलता हैं और खदबद खदबद करता हैं यह कर्ण के द्वारा जाना जाता हैं इस प्रकार पांचो इन्द्रिय का ज्ञान होता हैं।

२१७) संसारी जीव को अधिक रसों का ज्ञान होता हैं या रंगो का?

उत्तर- संसारी जीव को रंगो का ज्ञान अधिक होता हैं।

२१८) व्यक्ति किस इन्द्रिय के माध्यम से चलता हैं?

उत्तर- व्यक्ति सामान्य रुप से स्पर्शन इन्द्रिय के माध्यम से चलता हैं।

२१९) रोना, हँसना किस इन्द्रिय का काम हैं ?

उत्तर- रोना, हँसना यह पाँच इन्द्रिय का कार्य नहीं हैं वह तो मन से ही होता हैं ।

२२०) बताओं इस लोक में छह इन्द्रिय सहित कोई जीव हैं ?

उत्तर- इस लोक में छह इन्द्रिय वाले कोई जीव संसारी नहीं होते है।(मन को अन्द्रिय भी कहते हैं)

२२१) मानव के पास में स्पर्शन इन्द्रिय कहाँ नहीं हैं ?

उत्तर- मानव के पास स्पर्शन इन्द्रिय सर्वाङ्ग में रहती हैं।

२२२) किन किन जीवों के इन्द्रिय नहीं होती ?

उत्तर- सिद्ध परमात्मा एवं विग्रह गति में जाते समय जीव के इन्द्रिय नहीं होती हैं ।

२२३) अंतिम इन्द्रिय कौन सी हैं ?

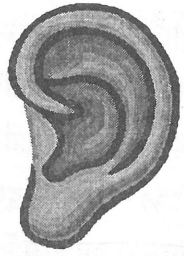

उत्तर- पांचवी इन्द्रिय श्रोत कही जाती हैं ।

२२४) श्रोत इन्द्रिय की क्या पहचान हैं ?

उत्तर- शब्द या आवाज ही श्रोत इन्द्रिय की पहचान है।

२२५) श्रोत (कर्ण) के द्वारा कितने प्रकार का ज्ञान होता हैं?

उत्तर- श्रोत के द्वारा दो प्रकार के, आवाज, अक्षरात्मक एवं अनक्षरात्मक का ज्ञान होता हैं ।

२२६) अक्षरो के माध्यम से कितने प्रकार का ज्ञान होता हैं ।

उत्तर- अक्षरों के माध्यम से समस्त स्वर व्यंजनो का एवं सा, रे, गा, मा, पा, दा, नि इनका भी ज्ञान होता हैं।

२२७) किस इन्द्रिय से सुस्वर, दुस्वर का ज्ञान होता है ?

उत्तर- कर्ण(कान) से ही दोनों का ज्ञान होता है।

२२८) सुस्वर (मीठे) के कुछ उदाहरण दिजीए ?

उत्तर- कोयल की बोली, मैना, तोता, मोर की आवाज, वीणा का स्वर आदि इनके सुस्वर होते हैं ।

२२९) कर्कष स्वर के कुछ उदाहरण दिजीए ?

उत्तर- रेलगाड़ी के इंजिन की आवाज, मशीन की आवाज, पागल कुत्ते की बोली, गधे की आवाज, कौए की आवाज आदिक यह दुःस्वर होते हैं।

२३०) अनक्षरात्मक आवाज किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो आवाज अक्षर (शब्दो) से ना बने उसे अनक्षरात्मक भाषा कहते हैं ।

२३१) अनक्षरात्मक भाषा किसकी होती हैं ?

उत्तर- अरहंत भगवान, पशु-पक्षी, बैन्ड बाजों की आवाज अनक्षरात्मक होती है।

२३२) क्या इन्द्रियाँ त्रस जीवों के पास होती हैं ?

उत्तर- इन्द्रियाँ त्रस और स्थावर दोनों जीवों के पास होती हैं।

२३३) इन्द्रियाँ ग्रहस्थो के पास होती हैं या आचार्योके पास होती हैं ?

उत्तर- इन्द्रियाँ दोनो प्रकार के संसारियों के पास होती हैं ।

२३४) क्या वृद्धो को बच्चों से ज्यादा इन्द्रियाँ रहती हैं ?

उत्तर- बड़ो से छोटे बच्चों के पास स्थूल इन्द्रियाँ छोटी बड़ी हो सकती हैं परंतु उनके पास पांच ही इन्द्रियाँ होती हैं।

२३५) हाथी तथा छिपकली के कितनी इन्द्रियाँ होती हैं ?

उत्तर- दोनों के पांच संपूर्ण इन्द्रियाँ ही रहती हैं।

२३६) क्या छह अंगुलीवालो के पास अधिक इन्द्रियाँ होती हैं?

उत्तर- नहीं, छिन्ना के पास भी पाँच ही इन्द्रियाँ रहती हैं ।

२३७) क्या किसी अंधे व्यक्ति के चार इन्द्रियाँ होती हैं ?

उत्तर- उसकी इन्द्रिय में विकृत होने से उसे दिखता नहीं हैं, परंतु वह व्यक्ति चार इन्द्रिय नहीं , पांच इन्द्रिय ही रहेगा।

२३८) टोयाटा गाड़ी चाबी घुमाई और चल पड़ी तो वह कितनी इन्द्रिय हैं ?

उत्तर- गाड़ी चलती हैं वह स्वयंचलित नहीं हैं, उसे सुख दुःख नहीं रहता। वह अजीव हैं (जीव नहीं)उसके कोई इन्द्रिय नहीं हैं।

२३९) संसार में पाँचों इन्द्रियाँ इस धरती पर नहीं होती तो क्या होता ?

उत्तर- संसार में पांचो इन्द्रियाँ भूमी पर नहीं होती तो संसार भी नहीं होता और संसारी जीव भी नहीं होते ।

२४०) क्या नासिका के द्वारा शब्दों का ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- नासिका के द्वारा गंध का ज्ञान होता हैं, शब्दों का ज्ञान नहीं होता हैं ।

२४१) नासिका के अंदर की गंदगी हैं यह कैसे जाना जाता हैं?

उत्तर- नासिका के अंदर गंदगी हैं इसको पर की अपेक्षा से (नेत्र) के माध्यम से जाना जा सकता हैं ।

२४२) कर्ण इन्द्रिय के बिना क्या हम प्रभु की वाणी और गुरु वाणी को सुन सकते हैं?

उत्तर- नहीं, पंचम इन्द्रियों के बिना हम प्रभु एवं गुरुवाणी नहीं सुन सकते इसलिए यह श्रोत इन्द्रिय प्रमुख मानी गयी हैं।

२४३) रास्ते में चलते हुए मनुष्य के सिर पर कबुतर की बीट गिर पड़ी तो यह किस इन्द्रिय का विषय बना ?

उत्तर- रास्ते में चलते हुये मनुष्य के सिर पर कबुतर की बीट पड़ी तो वह उस व्यक्ति अपेक्षा से स्पर्शन इन्द्रिय का विषय बनेगा ।

२४४) मानव के पास सर्वश्रेष्ठ इन्द्रिय कौन सी है ?

उत्तर- मानव के पास सर्वश्रेष्ठ इन्द्रिय नेत्र होना चाहिए क्योकि प्रभु की वंदना एवं उनकी वाणी को पढ़ने के लिए नेत्र का होना आवश्यक हैं जिससे अच्छे बुरे का भी विवेक हो सकता हैं।

२४५) सबसे घटिया इन्द्रिय मनुष्य के पास कौन सी हैं ?

उत्तर- सबसे घटिया इन्द्रिय मनुष्य के पास जबान(रसना) होना चाहिए क्यों कि, उसके द्वारा व गंदा बोलता एवं अभक्ष्य का भक्षण भी कर सकता है।

२४६) एकेन्द्रिय जीव त्रस होते या स्थावर रहते हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीव स्थावर ही होते हैं ।

२४७) एकेन्द्रिय जीव मुक्त है या संसारी ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीव संसारी जीव ही होते हैं ।

२४८) बताओ एकेन्द्रिय जीव मनुष्य गति के होते हैं या तिर्यंचगति के होते हैं ?

उत्तर- यह मनुष्य गति नहीं तिर्यंचगति के ही होते हैं।

२४९) क्या एकेंद्रिय निगोदिया जीव खाते-पीते हैं ?

उत्तर- यह जीव भी अपने प्राण को धारण करने के लिए खाते पीते भी हैं। (उर्जा प्राप्त करते हैं।)

२५०) बिजली, ओस, पत्थर, हवा, पेड़-पौधे, हाथी का पैर, जामुन, आम, तथा जलती मोमबत्ती इनके कितनी इन्द्रियाँ होती है ?

उत्तर- इन सबके स्पर्शन इन्द्रिय होती हैं ।

२५१) एकेद्रिय जीव की पहचान बताओं ?

उत्तर- जिनके सिर्फ शरीर होवे और अन्य इन्द्रियाँ ना होवें वही स्थावर एकेन्द्रिय जीव कहलाते हैं ।

जब हम कोई अच्छा काम करते हैं तो शक्ति अपने आप आ जाती हैं।

२५२) आपके दुकान, घर में कितने स्थावर जीव हैं ?

उत्तर- हमारे घर पर, दुकान में पांचो प्रकार के स्थावर एकेन्द्रिय जीव रहते हैं ।

२५३) स्थावर जीवो के अलग अलग नाम बताओं ?

उत्तर- (१) पृथ्वी कायिक (२) जल कायिक
(३) अग्नि कायिक (४) वायु कायिक
(५) वनस्पति कायिक

२५४) तीसरे स्थावर अग्नि कायिक का दूसरा नाम बताओ?

उत्तर- अग्नि कायिक को दूसरे शब्द में तेजस्कायिक भी कहते हैं।

२५५) वनस्पति घर में कहाँ पर पाये जाते हैं ?

उत्तर- वनस्पति घर में गमले में पाये जाते हैं ।

२५६) एकेन्द्रिय जीव छोटे से बड़े कैसे होते हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीव स्वभाव से हवा पानी के द्वारा छोटे से बड़े होते हैं ।

२५७) क्या स्थावर जीव भी त्रस बन सकते है ?

उत्तर- स्थावर जीव भी मरण करके त्रस बन सकते हैं।

२५८) क्या स्थावर जीव असंज्ञी पञ्चेंद्रिय हो सकते है ?

उत्तर- यह जीव असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय भी हो सकते हैं ।

२५९) एकेन्द्रिय जीव कैसे खाते पीते हैं, उनके मुख दिखाई नहीं देते हैं ?

उत्तर- इन जीवों के हमारे जैसे भोजनपान नहीं होता परंतु उनका समस्त शरीर के माध्यम से लेप्याहार होता हैं ।

**"जो व्यक्ति ने अपनी निंदा सह ली
मानो उसने सारे जगत पर विजय प्राप्त कर ली"**

२६०) त्रस और स्थावर जीवों में क्या भेद हैं ? अंतरसहित बताओं ?

	त्रस जीव		स्थावर जीव
१)	यह अपने शरीर से चलते फिरते हैं ।	१)	यह स्वयं चल फिर नहीं सकते।
२)	यह भोजनपान खोजते हुए यत्र तत्र चलते हैं ।	२)	यह अपने स्थान पर ही भोजनपान प्राप्त करते हैं ।
३)	इनके पास हड्डी, माँस आदिक होते हैं ।	३)	इनको हड्डी, मांस, चमड़ी आदिक नहीं होते ।
४)	इनके पास दो से अधिक इन्द्रिय होती हैं ।	४)	इनके एकेन्द्रिय ही होती हैं।
५)	यह भयभीत होकर उसका प्रतिकार करते हैं ।	५)	यह भयभीत होते हैं । पर प्रतिकार नहीं कर सकते है।
६)	यह बादर होते हैं।	६)	यह सूक्ष्म भी होते हैं ।
७)	यह मन युक्त भी होते हैं।	७)	यह नियम से मन रहित होते हैं।
८)	इनके कुछ नाम - शेर, चूहा, बैल, सेही, गेंडा, शंख, सीप, चिटी, भौरा	८)	इनके कुछ नाम - पेड़, हवा, पानी, आम, पान, आंधी, पृथ्वी, जलता हुआ बल्ब, ओंस कणादि।

**"जिस व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास नहीं
उसकी असफलता निश्चित हैं"**

पाठ
९
नवमाँ

जगत के पांच संसारी जीव

२६१) संसारी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- कर्म सहित जीव जो श्वॉस लेवे, छोटे से बड़े होते हो, जानते समझते हो उन्हे संसारी जीव कहते हैं ।

२६२) संसारी जीव की मुख्य पहचान बताओं ?

उत्तर- जिन्हे सुख-दुःख होता हैं, पसीना आता हैं यही उनकी पहचान हैं।

२६३) वह कौन से जीव हैं जो संसार के उलझन में उलझे रहते हैं?

उत्तर- जो संसार की उलझन में फँसते रहते हैं वह संसारी जीव ही होते हैं ।

२६४) क्या संसारी जीव इन इन्द्रियों के माध्यम से दिखते हैं?

उत्तर- संसारी जीवों की आत्मा इन इन्द्रियों से नहीं दिखती हैं । उनका स्थूल शरीर ही दिखता हैं ।

२६५) हम सब जीवात्मा है या अजीव हैं ?

उत्तर- निश्चय नयसे हम सब जीव ही हैं, परंतु यह जो शरीर दिखता हैं वह अजीव ही हैं।

२६६) क्या यह जीवात्मा फिर कभी निर्जीव होगा ?

उत्तर- यह जीवात्मा कभीभी अजीव नहीं हो सकता क्यों कि जिसका जो मुख्य गुण होता हैं वह कभी भी नष्ट नहीं होता। यह अकाट्य नियम हैं।

२६७) संसारी जीव कितने प्रकार के होते है ?

उत्तर- संसारी जीव पांच प्रकार के होते है।

"समय का सदुपयोग करो"

२६८) संसारी जीवों के भेद बताओं ?

उत्तर- (अ) एकेन्द्रिय जीव (आ) दो इन्द्रिय जीव
(इ) तीन इन्द्रिय जीव (ई) चार इन्द्रिय जीव
(उ) पञ्चेन्द्रिय जीव

२६९) बिजली ओस पत्थर बर्फ, पेड़, तूफान, पेट के कीडे, जामुन, नारियल इनके कितनी इन्द्रिय होती हैं ।

उत्तर- पेट के कीडे को छोड़ कर समस्त स्थावर जीव हैं ।

२७०) बताओ एकेन्द्रियों की मुख्य पहचान क्या है ?

उत्तर- जिनके मात्र चमड़ी (शरीर) होवे वह एकेन्द्रिय जीव की पहचान हैं ।

२७१) एकेन्द्रिय जीवों के शरीर किस आकार के होते हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीवों के शरीर अपने अपने आकार के होते हैं।

२७२) एकेन्द्रिय जीवों के कितने प्राण होते हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीवों के आहार, शरीर, इन्द्रिय, (स्पर्शन) और श्वासोच्छवास ये चार प्राण होते हैं ।

२७३) एकेन्द्रिय जीवों में उत्कृष्ट अवगाहना किसकी हैं?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीवों में उत्कृष्ट अवगाहना स्वयंभूरमण समुद्र में स्थित कमल की होती हैं जो १००० योजन की हैं ।

यदि मनुष्य को सुखी जीवन बिताना हैं तो सदा सत्संग तथा सुमिरन करें।

"किसी की भी निन्दा मत करो"

२७४) पाँचो स्थावरों जीवों में सबसे अधिक उपकारक कौन हैं ?

उत्तर- पाँचो स्थावरों में सबसे अधिक उपकारी पृथ्वी को ही माना हैं, यदि यह नहीं होती तो पानी, वनस्पति आदिक भी नहीं होते ।

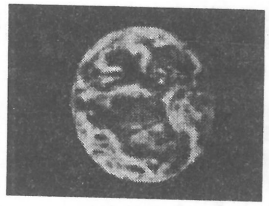

२७५) वनस्पति की उत्पत्ति में विशेष रुप से कौन सहायक हैं?

उत्तर- वनस्पति की उत्पत्ति में विशेष रुपसे पृथ्वी, जल, वायु एवम् सूर्य की किरणें (अग्नि) सहायक है।।

२७६) जीव किस कारण से एकेन्द्रिय बनता हैं ?

उत्तर- एकेन्द्रिय जाति नामकर्म के उदय की अधीनता रहने पर यह एकेन्द्रिय पर्याय प्रगट होती है।

२७७) वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- प्रत्येक वनस्पति और साधारण वनस्पति के भेद से इस काय में रहनेवाले जीव दो प्रकार के होते हैं।

२७८) प्रत्येक वनस्पति जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिसके शरीर में प्रथक/प्रथक एक एक जीव रहते हैं वह प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव कहलाते हैं।

२७९) प्रत्येक वनस्पति कायिक जीव कितने प्रकार के रहते हैं?

उत्तर- यह जीव भी सप्रतिष्ठित प्रत्येक और अप्रतिष्ठित प्रत्येक के भेद से दो प्रकार से कहे गये हैं ।

२८०) सप्रतिष्ठित प्रत्येक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिन प्रत्येक (अलग अलग) जीवों के आश्रित अन्य साधारण जीव पाये जाते है। उसे सप्रतिष्ठित प्रत्येक जीव कहते है।

२८१) अप्रतिष्ठित प्रत्येक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- साधारण जीवों से रहित प्रत्येक जीव अप्रतिष्ठित प्रत्येक कहलाते हैं।

२८२) एक जीव के आश्रित कितने जीव रह सकते हैं ?

उत्तर- एक जीव के आश्रित असंख्य जीव रह सकते हैं और उन सब जीवों की अलग अलग सत्ता रहती हैं।

२८३) साधारण वनस्पति किसे कहते है ?

उत्तर- जिस वनस्पतियों के शरीर में अनन्त जीवों का पिण्ड होता हैं वह साधारण वनस्पति कहलाते है।

२८४) साधारण वनस्पतियों के कुछ उदाहरण दिजिये ?

उत्तर- सेवाल, संपूर्ण कंदमूल इन्ही जीवों को निगोदिया भी कहते है।

२८५) स्थावर जीवों में और कौन से भेद होते हैं ?

उत्तर- प्रत्येक वनस्पति जीवों को छोड़कर शेष सभी स्थावर /बादर एवं सूक्ष्म जीव दोनों प्रकार के भी होते हैं ।

२८६) दो इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिसके पास स्पर्शन के साथ रसना इन्द्रिय भी होती हैं उसे दो इन्द्रिय जीव कहते है।

२८७) दो इन्द्रिय जीव की पहचान क्या हैं ?

उत्तर- स्पर्श के साथ रसों को चखने की विशेष योग्यता रखते हैं। यही दो इन्द्रिय जीव की पहचान हैं।

२८८) दो इन्द्रिय जीव त्रस होते या स्थावर होते हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीव नियम त्रस ही होते हैं ।

२८९) बेर में त्रस स्थावर कौन से जीव होते हैं ?

उत्तर- बेर में दोनों प्रकार के जीव होते हैं क्योंकि उसमें लट होते हैं।

२९०) दो इन्द्रिय जीव की अन्तिम इन्द्रिय कौनसी हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रियजीव की अन्तिम रसना इन्द्रिय हैं।

२९१) क्या कैचुआ, इल्ली के स्पर्श के साथ रसना इन्द्रिय भी होती है ?

उत्तर- हाँ, कैचुआ इल्ली के स्पर्श के साथ रसना इन्द्रिय भी रहती है।

२९२) क्या मक्खी और मच्छर दो इन्द्रिय जीव होते हैं ?

उत्तर- मक्खी और मच्छर यह दो इन्द्रिय नहीं यह चार इंद्रिय होते हैं।

२९३) क्या दो इन्द्रिय जीव पशु पक्षी होते हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीव ना ही पशु होते हैं ना पक्षी होते हैं।

२९४) क्या दो इन्द्रिय जीव खान पान एवं श्वॉस लेते हैं ?

उत्तर- हाँ दो इन्द्रिय जीव भोजन पान एवं श्वॉस भी लेते हैं।

२९५) क्या दो इन्द्रिय जीव के नाक और नेत्र होते हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीव के मात्र रसना होती हैं नाक नेत्र नहीं होते हैं।

२९६) क्या दो इन्द्रिय जीव मरण करके चार इन्द्रिय जीव बन सकते हैं ?

उत्तर- हाँ, दो इन्द्रिय जीव मरण करके चार इन्द्रिय जीव बन सकते हैं।

२९७) रसना इन्द्रिय का आकार किस प्रकार का होता हैं ?

उत्तर- रसना इन्द्रिय वाले जीवों का आकार खुरपा के समान होता हैं।

२९८) दो इन्द्रिय जीवों में सबसे बड़ी अवगाहना किसकी होती हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीवों में शरीर की सबसे बड़ी अवगाहना शंख की १२ योजन होती हैं।

२९९) दो इन्द्रिय के कुछ नाम बताओं ?

उत्तर- जौंक, चीलर दीमक, सीप, शंख इत्यादि,।

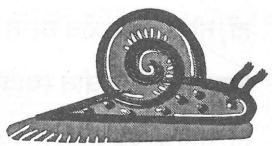

३००) दो इन्द्रिय जीवों के कितने प्राण होते हैं ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीवों के कायवल, वचनवल, आयु और श्वासोच्छवास यह दो इन्द्रिय यह छह प्राण होते हैं।

३०१) दो इन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है ?

उत्तर- दो इन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आयु १२ वर्ष की होती हैं।

३०२) तीन इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिन जीवों के स्पर्शन, रसना और घ्राण यह तीन इन्द्रियाँ होवें उसे तीन इन्द्रिय जीव कहते हैं।

३०३) तीन इन्द्रिय जीवों की मुख्य पहचान बताओं ?

उत्तर- जो जीव विशेष रुप से सुंघ करके जानते हैं

३०४) तीन इन्द्रिय जीव क्या देखते, सुनते हैं ?

उत्तर- नहीं, तीन इन्द्रिय जीवों के नेत्र और कर्ण नहीं होते इसलिए वे देख सुन नहीं सकते।

३०५) आप अपने घरों में पाये जाने वाले तीन इन्द्रिय जीवों के नाम बताओं ?

उत्तर- बिच्छू, पिपीलिका, इंद्रगोप, तिरुला, खटमल, जूँ, आदि

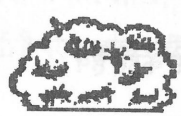

३०६) तीन इन्द्रिय जीव त्रस होते या स्थावर होते हैं ?

उत्तर- तीन इन्द्रिय जीव त्रस ही होते हैं ।

३०७) क्या तीन इन्द्रिय जीव चलते फिरते हैं ?

उत्तर- हाँ, तीन इन्द्रिय जीव चलते फिरते हैं ।

३०८) क्या तीन इन्द्रिय जीव स्थावर भी हो सकते हैं ?

उत्तर- हाँ, तीन इन्द्रिय जीव मरण कर स्थावर भी हो सकते हैं ।

३०९) तीन इन्द्रिय जीवों के एकेन्द्रिय जीवों से क्या अधिक हैं?

उत्तर- एकेन्द्रिय जीवों से इनके पास रसना और घ्राण इन्द्रिय अधिक है।

३१०) बताओं, जगत के तीन इन्द्रिय जीवों के कौनसी इन्द्रियाँ कम हैं ?

उत्तर- जगत के तीन इन्द्रिय जीवों के चक्षु और कर्ण ये दोनों इन्द्रियाँ नहीं हैं ।

३११) क्या जिसके नासिका इन्द्रिय है उसके रसना इन्द्रिय रहती हैं ?

उत्तर- हाँ, जिसके नासिका रही हैं उसके नियम से रसना इन्द्रिय होती हैं ।

३१२) घ्राण इन्द्रिय का आकार किसके समान होता हैं ?

उत्तर- घ्राण इन्द्रिय का आकार तिल के फूल के समान रहता हैं।

३१३) तीन इन्द्रिय जीवों में किसकी उत्कृष्ट अवगाहना होती हैं ?

उत्तर- तीन इन्द्रिय जीवों में चींटी की उत्कृष्ट अवगाहना ३ कोस होती हैं ।

३१४) गुलाब के फूल और मिट्टी के तेल से किसका ज्ञान होता हैं ?

उत्तर- गुलाब के फूल और मिट्टी के तेल को नासिका द्वारा सुँघकर खुशबू और बदबू को जाना जाता हैं ।

३१५) तीन इन्द्रिय जीवों के कितने प्राण होते हैं ?

उत्तर- तीनों इन्द्रियाँ और कायबल, वचनबल, आयु और श्वासोच्छवास यह सात प्राण होते है।

३१६) चार इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिनके तीन इन्द्रिय के अतिरिक्त चक्षु इन्द्रिय और रहती हैं वह चार इन्द्रिय जीव कहलाते हैं।

३१७) चार इन्द्रियों से हम क्या काम लेते हैं ?

उत्तर- चार इन्द्रियो से हम छूने का (स्पर्श), चखने का(रसना), सुंघने का(गंध), देखने का (नेत्र) यह काम लेते हैं ।

३१८) चक्षु इन्द्रिय जीवों के पास कौन सी इन्द्रिय नहीं होती?

उत्तर- चार इन्द्रिय जीवों के पास पांचवी श्रोत्र इन्द्रिय नहीं होती।

३१९) मंदिरजी में रहनेवाले चार इन्द्रिय जीवों के नाम बताओं?

उत्तर- मकड़ी, मच्छर, मक्खी, बरैय्या, तितली आदि।

३२०) क्या कुर्सी के चार पाय चार इन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर- नहीं, कुर्सी के चार पाय अजीव हैं, उनके इन्द्रिय नहीं रहती हैं।

३२१) क्या गाय घोड़े के चार पैर हैं इसलिए वह चार इन्द्रिय जीव हैं बताओं ?

उत्तर- नहीं गाय घोड़े के चार पैर होते हैं परन्तु व पांच इन्द्रिय जीव हैं।

३२२) हाथी के चार पैर और एक सुण्ड हैं तो वह कितने इन्द्रिय हैं ?

उत्तर- हाथी के चार पैर और एक सुण्ड यह कर्म इन्द्रिय कहलाती हैं परन्तु हाथी तो पंच इन्द्रिय जीव ही हैं ।

३२३) चार इन्द्रिय जीव त्रस होते है या स्थावर ?

उत्तर- चार इन्द्रिय जीव त्रस ही होते हैं, स्थावर नहीं।

३२४) बताओ, चार इन्द्रिय जीवों के पास आँख, कान होते हैं ?

उत्तर- इनके पास आँख तो होती हैं परन्तु कान नहीं होते हैं ।

३२५) क्या चार इन्द्रिय जीव धर्मशाला में पाये जाते हैं ?

उत्तर- हाँ, धर्मशाला में भी डांस, मच्छर, पतंगा, बिजली के कीड़े आदि पाये जाते हैं।

३२६) सड़क पर कौनसी चार इन्द्रिय जीव रहते हैं ?

उत्तर- भौरा, मधुमक्खी तितली आदिक जीव रहते हैं ।

३२७) चार इन्द्रिय जीवों की मुख्य पहचान बताओं ?

उत्तर- जिन जीवों के पास आखें होती हैं जो विशेष रुप से रंगो को जानते हैं ही चार इन्द्रिय जीवों की पहचान हैं ।

३२८) जूँ बिना आँख के कैसे देखते हैं ?

उत्तर- जूँ बिना आँख के नासिका के माध्यम से जानता समझता हैं।

३२९) मरी हुई मक्खी और मच्छर कितने इन्द्रिय होते हैं ?

उत्तर- मरी हुई मक्खी और मच्छर कोई जीव नहीं हैं।

३३०) सूखी चंदन की लकडी एवं प्रासुक फल कितने इन्द्रिय हैं?

उत्तर- यह दोनों इन्द्रियों से रहित हैं क्योंकि उनमें जीव नहीं हैं ।

३३१) कोट, पेन्ट, कमीज, पेजामा, कुर्ता आदिक कितने इन्द्रिय हैं ?

उत्तर- इनके कोई इन्द्रिय नहीं होती क्योंकि वह अजीव हैं।

३३२) क्या दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय जीवों को खाने के उपयोग में ले सकते हैं ?

उत्तर- नहीं, यह दोनों जीवों के पास मांस, मज्जा, चर्म आदि धातुएँ पाए जाते हैं इसलिए यह खाने और छूने के योग्य भी नहीं हैं ।

३३३) विकल त्रय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो दो से अधिक चार इन्द्रिय तक रहते हैं तथा जिनके पूर्ण इन्द्रिय नहीं रहते वह विकलत्रय ही हैं ।

३३४) सिद्ध परमेष्ठी के कितने इन्द्रियाँ हैं ?

उत्तर- सिद्ध परमेष्ठी शरीर रहित होते हैं इसलिए उनके पास कोई इन्द्रिय नहीं होती हैं । (वह शुद्ध जीव हैं)

३३५) जगत में चौथी इन्द्रिय का आकार किस प्रकार का होता हैं ?

उत्तर- जगत में चौथी इन्द्रिय का आकार मसूर के दाने के समान होता हैं ।

३३६) चार इन्द्रिय जीवों में उत्कृष्ट अवगाहना किसकी रहती हैं ?

उत्तर- चार इन्द्रिय जीवों में भ्रमर (भौरा) की उत्कृष्ट एक योजन अवगाहना होती है।

३३७) चार इन्द्रिय जीव में कितने प्राण होते हैं ?

उत्तर- चारों इन्द्रियाँ, कायबल, वचनबल, एवं आयु, श्वासोच्छवास यह आठ प्राण होते हैं।

३३८) जगत में पांच इन्द्रिय जीव किसे कहते है ?

उत्तर- जिनके पास पांच इन्द्रियाँ होती हैं उन्हे पांच इन्द्रिय जीव कहते हैं ।

३३९) ऊपर से पांचो इन्द्रियों के नाम बताओं ?

उत्तर- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, आँखे और कान यह पांच इन्द्रियाऐ पायी जाए उन्हे पञ्चेद्रिय जीव कहते हैं ।

३४०) पांचो इन्द्रियो से संसारी प्राणी क्या कार्य करते हैं ?

उत्तर- पांचो इन्द्रियों से संसारी प्राणी स्पर्श (छूना), चखना, सुंघना, देखना, सुनना यह कार्य करते हैं ।

३४१) पञ्चेद्रिय जीवों के कौन सा नामकर्म का उदय होता हैं?

उत्तर- पञ्चेद्रिय जीवों के त्रस नामकर्म का उदय होता हैं ।

३४१) क्या देव नारकी पांच इन्द्रिय होते है ?

उत्तर- हाँ देव तथा नारकी दोनो पञ्चेद्रिय होते है ।

३४२) क्या समस्त तिर्यंच गति के जीव पञ्चेंद्रिय होते हैं ?

उत्तर- समस्त तिर्यंच त्रस और स्थावर दोनों प्रकार के होते हैं ।

३४३) जगत के जीवों में तिर्यंच श्रेष्ट हैं या मनुष्य ?

उत्तर- जगत के जीवों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं ।

३४४) नारकी जीव कितने इन्द्रिय होते हैं ?

उत्तर- नरक के रहनेवाले नारकी पञ्चेंद्रिय जीव ही होते हैं ।

३४५) समस्त चौपाए जानवर एवम् चूहा, छिपकली कितने इन्द्रिय होते हैं ?

उत्तर- उपरोक्त सभी जीव पञ्चेंद्रिय होते हैं।

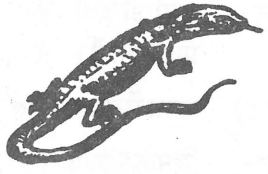

३४६) मोर, कबूतर, चील, चिड़ीयाँ आदिक पक्षी कितने इन्द्रिय जीव होते हैं ?

उत्तर- उपरोक्त सभी जीव पञ्चेंद्रिय हैं ।

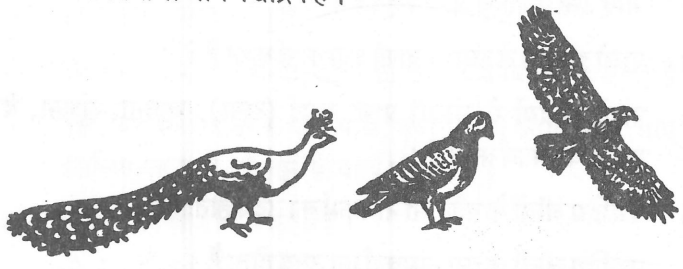

३४७) भौरा, बिच्छु, शंख, जल, बहता झरने का पानी कितने इन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर- यह समस्त जीव चार, तीन, दो, एक इन्द्रिय होते हैं।

३४८) कोचिंग पढानेवाले सर और विद्यार्थी कौन से इन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर- कोचिंग पढाने वाले सर और विद्यार्थी पञ्चेंद्रिय जीव हैं ।

३४९) कौन सी इन्द्रिय ज्यादा उपयोग में आती हैं ?

उत्तर- व्यक्तियों को अधिक उपयोग में चक्षु इन्द्रिय प्रयोग में आती हैं।

३५०) अष्टापद नामक पशु कितने इन्द्रिय हैं ?

उत्तर- अष्टापद यह पशु भी पञ्चेंद्रिय होता हैं।

३५१) पञ्चेंद्रिय त्रस जीवों में सबसे बड़ी शरीर की अवगाहना किसकी होती हैं ?

उत्तर- पञ्चेंद्रिय त्रस जीवों में सबसे बडी अवगाहना स्वयंभूरमण समुद्र में रहनेवाले मगरमच्छ की १००० योजन लंबा, ५०० योजन चौडा, २५० योजन मोटा होता हैं।

३५२) नामकर्म किसे कहते है ?

उत्तर- जो जीवों को अनेक प्रकार के शरीर में रोक रखे जिसके उदय से अनेक प्रकार का शरीर और उसके अङ्ग उपाङ्ग बनते हैं उसे नामकर्म कहते हैं।

३५३) किस कर्म के उदय से पेड़ पौधे एक स्थान पर स्थिर (खड़े) रहते हैं ?

उत्तर- स्थिर शरीर नामकर्म के उदय से जीव, पहाड़, पेड़ आदि एक स्थान पर स्थित रहते हैं ।

३५४) कौन सा जल पीने योग्य होता हैं बताओं ?

उत्तर- जल छानकर के पीने योग्य होता हैं क्योंकि उसमें से त्रस जीवों को गालन करके तथा योग्य स्थानपर छोड़ा जाता हैं इसी कारण जल पीने योग्य हैं ।

३५५) क्या शराब पीने योग्य हैं ?

उत्तर- नहीं शराब पीने योग्य नहीं हैं क्योकि उसमे त्रस जीवों को उत्पन्न करके उबाला जाता हैं इसी कारण वह छूने योग्य भी नहीं हैं।

३५६) क्या शीत पेय कोकाकोला, थम्सअप, मिनरल वॉटर पीने योग्य हैं ?

उत्तर- नहीं, शीत पेय पीने योग्य नहीं हैं क्यों कि इसमें अनेक प्रकार के रसायन

एवम् कीटनाशक मिलाए जाते हैं ।

३५७) बताओ पांच इन्द्रियों में से कौन सी काम इन्द्रियाँ होती है?

उत्तर- समस्त इन्द्रियों में से यह दोनों स्पर्शन इन्द्रिय व रसना इन्द्रिय कामेन्द्रियाँ कही गयी हैं ।

३५८) बताओ पांच इन्द्रियों में से भोग इन्द्रियाँ कौनसी हैं ?

उत्तर- घ्राणेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय एवं श्रोत्र इन्द्रिय यह तीन इन्द्रिय भोग इन्द्रिय कही गयी हैं ।

३५९) क्या आँख वाले संसारी प्राणीयों के रसनेन्द्रिय रहेगी?

उत्तर- चतुर्थ इन्द्रियवालों के नियम से रसना इन्द्रिय रहेगी ।

३६०) क्या जिसके नासिका हैं उसके पैर रहेंगे ?

उत्तर- हाँ जिसके घ्राण इन्द्रिय हैं उसके पैर नियम से देखने में आते हैं।

३६१) बताओं जिन संसारी जीवों के पंख होते है उनके नेत्र रहेगे क्या ?

उत्तर- जिन संसारी जीवो के पर रहते हैं उनके आखें नियम से होती हैं।

३६२) जिन संसारी प्राणीयों के नेत्र होते हैं उनके कान रहेंगे?

उत्तर- जिनकी आंखे रहती हैं ऐसे चार इन्द्रियों के कान नहीं रहते हैं।

३६३) यदि पेड़ को समुद्र का खारा पानी डाला जाए तो उसे खारा लगेगा क्या ?

उत्तर- पेड को खारे का ज्ञान नहीं होगा क्योंकि वह एकेन्द्रिय (शरीर) होता हैं ।

३६४) प्रकाश के ना होने पर मनुष्य कितने इन्द्रिय वाला हैं?

उत्तर- अंधेरा होने पर मनुष्य आँख से देख नहीं सकता हैं परन्तु इन्द्रियाँ पूर्ण ही होती हैं।

३६५) बताओ बिच्छु, खटमल रोशनी को देखकर भागते हैं क्या ?

उत्तर- यह दोनों तीन इन्द्रिय जीव होने से प्रकाश को देख कर नहीं भागते क्योंकि उन्हे रंग का ज्ञान नहीं होता ।

३६६) बताओ हमारे पास नेत्र नहीं तो क्या होता ?

उत्तर- यदि हमारे पास नेत्र नहीं होते तो हमारा जीवन हमेशा अंधकार मय ही रहता, हम कुछ नही देख पाते ।

३६७) तोते, सर्प के कान दिखते नहीं वह कितने इन्द्रिय हैं?

उत्तर- इन दोनों के कान हमें दिखाई नही देते परन्तु वह पञ्चेद्रिय ही नियम से होते है।

३६८) संसारी जीवों के कितने लिङ्ग (चिन्ह) होते हैं ?

उत्तर- संसारी जीवों के स्त्रीलिङ्ग, पुरुष लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग, यह तीन लिङ्ग हैं ।

३६९) मनुष्य एवं तिर्यंच जीवों के कितने लिंग होते हैं ?

उत्तर- मनुष्य एवं तिर्यंच जीवों के तीन प्रकार के लिङ्ग होते हैं ।

३७०) एकेन्द्रिय से लेकर चार इन्द्रिय एवं नारकी जीवों के कौन सा लिङ्ग होता हैं ?

उत्तर- इन समस्त जीवों के एक नपुंसक लिङ्ग ही होता हैं ?

३७१) देवगति के जीवों के कौन कौनसे लिङ्ग होते हैं ?

उत्तर- देवगति के जीवों के स्त्री और पुरुष दोनो लिङ्ग होते हैं ?

३७२) संसारी समस्थत जीवों के कितनी संज्ञाए होती है ?

उत्तर- समस्त संसारी जीवों के आहार, भय, मैथुन एवं परिग्रह यह चारों संज्ञाए होती हैं ।

३७३) पञ्चेद्रिय जीवों के कितने प्राण होते है ?

उत्तर- समस्त इन्द्रियाँ, तीनों बल, आयु, एवं श्वासोच्छवास यह पञ्चेद्रिय जीवों के दस प्राण होते है।

३७४) त्रस किसे कहते हैं ?

उत्तर- त्रस नामकर्म के उदय से प्राप्त जीवों के अवस्था विशेष को त्रस कहते है।

३७५) त्रस जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- त्रस जीव दों इन्द्रिय से पांच इन्द्रिय तक पञ्चेंद्रिय संज्ञी, असंज्ञी के भेद से दो प्रकार के कहे हैं।

३७६) तिर्यंच पञ्चेंद्रिय जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- तिर्यंच पञ्चेंद्रिय जीव तीन प्रकार के होते है।

(१) जलचर तिर्यंच जीव

(२) थलचर तिर्यंच जीव

(३) नभचर तिर्यंच जीव

३७७) क्या स्विमिंग पुल में तैरता हुआ बालक जलचर हैं ?

उत्तर- जल में तैरता हुआ बालक जलचर नहीं हैं । यह तो मनुष्य हैं तिर्यंच नहीं हैं ।

३७८) क्या हम तुम थलचर जीव हैं ?

उत्तर- हम लोग थलचर नहीं संज्ञी पञ्चेंद्रिय मनुष्य हैं ।

३७९) जलचर जीव किसे कहते है ?

उत्तर- जो तिर्यंच पञ्चेंद्रिय जीव जल में पाये जाते हैं उन्हे जलचर जीव कहते हैं ।

३८०) जलचर जीवों के कुछ उदाहरण दिजीए ।

उत्तर- मछली, मगरमच्छ, कछुवा, पानी का सर्प, मेंढ़क, केंकड़ा आदिक।

३८१) थलचर पञ्चेंद्रिय तिर्यंच जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- थलचर पञ्चेंद्रिय जीव पृथ्वी पर चलते फिरते हैं उसे थलचर जीव कहते है।

३८२) थलचर तिर्यंचो के कुछ उदाहरण दीजीए ?

उत्तर- गाय, भैंस, बैल, कुत्ता, चूहा, बंदर, शेर, बिल्ली, चीता आदिक।

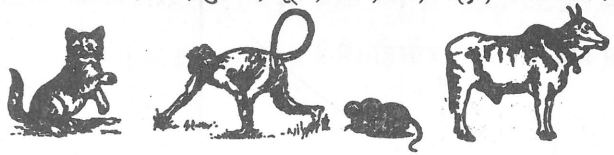

३८३) नभचर तिर्यंच पञ्चेंद्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो जीव आकाश में उड़ा करते हैं उन्हे पञ्चेंद्रिय तिर्यंच नभचर जीव कहते हैं।

३८४) नभचर तिर्यंच पञ्चेंद्रिय जीवों के कुछ उदाहरण बताओ ?

उत्तर- तोता, कौआ, कबुतर, चिड़ीया, बाज, चील, आदिक।

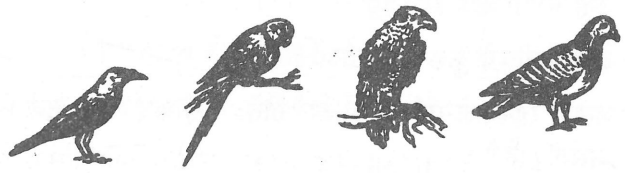

३८५) मनुष्यगति के विद्याधर एवं स्वर्ग के देव कौन से चर जीव हैं।

उत्तर- मनुष्यगति के विद्याधर एवं स्वर्ग के देव कोई चर नहीं हैं, वे तो मनुष्यगति और देवगति के जीव हैं।

३८६) पञ्चेंद्रिय जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- संज्ञी, असंज्ञी के भेद से पञ्चेंद्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं।

३८७) संज्ञी, असंज्ञी को अन्य शब्दो और क्या कहते हैं ?

उत्तर- सैनी, असैनी एवं इन्हें समनस्क, अमनस्क भी कहते हैं।

३८८) संज्ञी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर- मन सहित जीवों को जो शिक्षा और उपदेश को ग्रहण कर सकते हैं, उसपर विचार कर सकें उन्हे संज्ञी जीव कहते है।

३८९) संज्ञी जीवों के कितनी इन्द्रिया होती हैं ? उनके कुछ नाम बताओं ?

उत्तर- संज्ञी जीवों के पांचो इन्द्रियों सहीत मन भी होता हैं । मनुष्य देव नारकी हांथी घोड़ा, बैल, बंदर आदि।

३९०) हम सब संज्ञी या असंज्ञी जीव हैं ?

उत्तर- हम सब छोटे बड़े, संज्ञी ही होते हैं ।

३९१) मुक्त जीव सैनी है या असैनी होते हैं ?

उत्तर- मुक्त जीव ना सैनी है, ना असैनी वह तो सिद्ध परमात्मा हैं।

३९२) असैनी (असंज्ञी)किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो मन से रहित होंवे, तथा जो शिक्षा, उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकते हैं उन्हे असैनी जीव कहते हैं ।

३९३) असंज्ञी जीव के कुछ नाम बताओं ?

उत्तर- जल में रहनेवाले सर्फ, कोई कोई तोतें, कोई कोई गधे, कुछ मेंढ़क भी असंज्ञी होते हैं ।

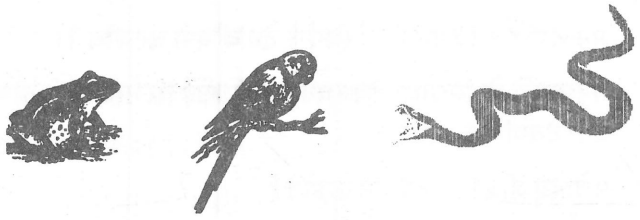

३९४) बताओ असंज्ञी जीव कौन सी गति के होते हैं ?

उत्तर- असंज्ञी नियम से तिर्यंच गति के जीव होते हैं ।

३९५) स्थावर एवं विकलेन्द्रिय जीव संज्ञी असंज्ञी होते हैं?

उत्तर- स्थावर एवं विकलेन्द्रिय जीव नियम से असंज्ञी ही होते हैं (सम्मूर्च्छन जन्म लेने वाले कोई तिर्यंच जीव असंज्ञी भी होते हैं ।)

३९६) जन्म किसे कहे हैं ?

उत्तर- नवीन शरीर को धारण करना ही जन्म कहलाता हैं ।

"अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखना सीखों"

३९७) सम्मूर्च्छन जन्म किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो जन्म माता पिता के बिना अपने शरीर के योग्य पुद्गल परमाणुओं को वातावरण के माध्यम से ग्रहण कर संरचना होती हैं उसे सम्मूर्च्छन जन्म कहते हैं।

३९८) मकड़ी, ततैया, उल्लू, तोता यह संज्ञी हैं या असंज्ञी ?

उत्तर- मकडी ततैया असंज्ञी ही होते हैं, परन्तु तोता, उल्लू, दोनों प्रकार के होते हैं ।

३९९) क्या सभी पञ्चेंद्रिय जीव संज्ञी होते हैं ?

उत्तर- सभी पञ्चेंद्रिय जीव नियम से संज्ञी नहीं होते हैं।

४००) असैनी जीवों के कम से कम कितनी इन्द्रियाँ हैं ?

उत्तर- असंज्ञी जीवों के कम से कम एकेंद्रिय होती हैं ।

४०१) असंज्ञी जीवों के अधिक से अधिक कितनी इन्द्रियाँ होती हैं ?

उत्तर- असंज्ञी जीवों के अधिक से अधिक संपूर्ण इन्द्रियाँ होती हैं। (वह तो मन रहित होते हैं ।)

४०२) अंधा, बहिरा मनुष्य असंज्ञी हैं या संज्ञी ?

उत्तर- अंधा, बहिरा मनुष्य संज्ञी ही होता हैं ।

४०३) पेट का बच्चा संज्ञी होता हैं या असंज्ञी होता है ?

उत्तर- पेट का बच्चा संज्ञी होता हैं वह असंज्ञी नहीं हैं।

४०४) जंगल और खेत के पांच असंज्ञी जीवों के नाम लिखों?

उत्तर- गधा, पेड़, तितली, मच्छर, और मकड़ी ये सब असंज्ञी हैं।

४०५) एक बगीचे में सात आम के पेड़ हैं उन पेड़ों पर चार कोयल बैठी हुई मधुर स्वर में बोल रहीं हैं जिसके पास गुलाब के पौधों पर सात भौरे मंडरा रहे हैं इन सब सैनी असैनी और चर आदि जीवों को जानों।

उत्तर- समस्त पेड़, पौधे, फूल, और भौरे असंज्ञी जीव हैं। चारों कोयल संज्ञी एवं नभचर हैं।

सायंकाल की स्तुति

हे सर्वज्ञ ज्योतिमय गुणमणि, बालकजन पर करहूँ दया।
कुमति निशा अंधियारी कारी, सत्य ज्ञान रवि छिपा दिया॥ १॥
क्रोध मान अरु माया तृष्णा, यह बटमार फिरें चहुँ ओर।
लूँट रहे जग जीवन को यह, देख अविद्या तम का जोर॥ २॥
मारग हमको सूझे नाहीं, ज्ञान बिना हम अन्ध भये।
घट में आय बिराजो स्वामी, बालक जन सब खड़े नये॥ ३॥
सत्पथ दर्शक जन मन हर्षक, घट घट अन्तर यामी हो।
श्री जिनधर्म हमारा प्यारा, उस के तुम ही स्वामी हो॥ ४॥
घोर विपत्ती में आन पड़ा हूँ, मेरा बेड़ा पार करो।
शिक्षा का हो घर-घर आदर, शिल्प कला संचार करो॥ ५॥
मेल मिलाप बढ़ावें हम-सब, द्वेष भाव हो घटा-घटी।
नहीं सतावें किसी जीव को, प्रीति क्षीर की गटा-गटी॥ ६॥
मात-पिता अरु गुरुजन की हम, सेवा निश-दिन किया करें।
स्वारथ तजकर सुख दें पर को, आशीष सब की लिया करें॥ ७॥
आतम शुद्ध हमारा होवें, पाप मैल नहीं चढे कदा।
विद्या की हो उन्नति हममें, धर्म ज्ञान हूँ बढ़े सदा॥ ८॥
हाथ जोड़कर बालक ठांडे करें प्रार्थना सुनिये तात।
सुख से बीते रैन हमारी, जिनमत का हों शीघ्र प्रभात॥ ९॥
मात-पिता की आज्ञा पालें, गुरु की भक्ति घरैं ऊर मैं।
रहें सदा हम कर्त्तव्य तत्पर, उन्नति कर दें पुर-पुर मैं॥ १०॥

गुरु-भक्ति

गुरुवर तुम्ही बता दो किसकी शरण में जाये ..
किसकी शरण मैं गिरकर मन की व्यथा सुनाऊँ।

गुरुवर तुम्ही...

अज्ञान के तिमिर ने चारों तरफ से घेरा
क्या रात हैं प्रलय की होगा नहीं सबेरा।
पथ और प्रकाश दोनों चलने की शक्ति पाये... गुरुवर तुम्ही...
जीवन के देवता का करते रहे निरादर
कैसे करें समर्पित जीवन के गिर निशाकर।
यह पाप की गठरिया क्या खोलकर दिखाये... गुरुवर तुम्ही...
दुष्वृत्तियों ने हमको घेरा कदम कदम पर
कभी काम क्रोध बनकर, कभी माया लोभ बनकर
इन दानवों से कैसे अपना गला छुड़ायें... गुरुवर तुम्ही...
माना कपूत हम हैं क्या रुष्ट रह सकोगे
मुस्कान प्यार अमृत क्या दे नहीं सकोगे
दाता तुम्हारे दर से जाये तो किधर जाये...
गुरुवर तुम्ही बता दो किसकी शरण में जाये ..
किसकी शरण मैं गिरकर मन की व्यथा सुनाऊँ।

पंच महागुरुभक्ति

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज द्वारा रचित

सुरपति शिर पर किरीट धारा, जिसमें मणियां कई हजारा।
मणि की द्युति -जल से धुलते है, प्रभु पद -नमता सुख फ़लते है॥ १॥
सम्यक्त्वादिक वसु -गुण -धारे, वसु - विध विधि - रिपु नाशन हारे।
अनेक सिद्धों को नमता हूँ, इष्ट-सिद्धि पाता समता हूँ ॥ २॥
श्रुत -सागर को पार किया है,शुचि संयम का सार लिया है।
सुरीश्वर के पद कमलों को, शिर पर रख लुँ दुख-दलनों को ॥ ३॥
उन्मार्गी के मद -तम हरते, जिनके मुख से प्रवचन झरते
उपाध्याय ये सुमरण करलूँ। पाप नष्ट हो सुमरण करलूँ ॥ ४॥
समदर्शन के दीपक द्वारा, सदा प्रकाशित बोध सुधारा।
साधु चरित के ध्वज कहाते, दे-दे मुझको छाया तातैं ॥ ५॥
विमल गुणालय -सिद्धजनों को, उपदेशक मुनि-गणी-गुणों को।
नमस्कार पद पंच इन्हीं से, त्रिधा नमूँ शिव मिले इस से ॥ ६॥
सिद्ध शुद्ध है जय अरहन्ता, गणी पाठका जय ऋषि संता।
करें धरा पर मंगल साता, हमें बना दें शिव सुख धाता ॥ ७॥
नमस्कार वर मन्त्र यही है, पाप नसाता देर नहीं है
मंगल-मंगल बात सुनी है, आदिम मंगल - मात्र यही है ॥ ८॥

सिद्धों को जिनवर चन्दों को, गण नायक पाठक वृन्दों को।
रत्नात्रय को साधु जनों को, वन्दू पाने उन्ही गुणों को ॥ ९॥
सुरपति चूडामणि -किरणों से, लालित सेवित शतों दलों से।
पॉचो परमेष्ठी के प्यारे, पादपद्म ये हमें सहारे ॥ १०॥
महाप्रतिहार्यों से जिनकी, शुद्ध गुणों से सुसिद्ध गण की।
वसु विध योगांगो से मुनि की, करुँ सदा स्तुति शुचि से मन की ॥ ११॥

* अञ्चलिका *

दोहा : पंच महागुरु भक्ति का करके कायोत्सर्ग।
आलोचन उसका करु, ले प्रभु तव संसर्ग॥
लोक शिखर पर सिद्ध विराजे अगिनत गुणगण मण्डित हैं।
प्रातिहार्य आठों से मडिण्त, जिनवर पण्डित पण्डित है॥
पँचाचारों रत्नत्रय से, शोभित है आचार्य महॉ॥
उपाध्याय उपदेश सदा दें, चरित बोध का शिव पथ का।
रत्नात्रय पालन में रत हो, साधु सहारा जिनमत का॥
भाव भक्ति से चाव शक्ति से निर्मल कर - कर निज मन को।
वन्दू पूंज अर्चन कर लूँ, नमन करु उन मुनिगण को॥
कष्ट दूर हो कर्म चूर हो, बोधि लाभ हो सद्गति हो।
वीर मरण हो जिनपद मुझको, मिले सामने सन्मति हो॥

* आचार्य वन्दना *

श्री सिद्ध भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्य वन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म -क्षयार्थं, भावपूजावंदना-स्तवसमेतं श्रीसिद्ध-भक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यऽहं।

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-मव्वावाहं अट्ठ-गुणा-होंति सिद्धाणं॥ १॥
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि॥ २॥

इच्छामि भंते ! सिद्ध भक्ति - काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित जुत्ताणं अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तव-सिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदा-णागद-वट्टमाण-कालत्तयसिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

श्री श्रुत भक्ति

अथ पौर्वाण्हिक/आपराह्णिक आचार्यवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वंदना-स्तव समेतं श्री श्रुतभक्ति - कायोत्सर्गं करोम्यऽहं।

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-स्त्र्यधि-कानि चैव।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्र-संख्या, मेतच्छुतं पञ्चपदं नमामि॥ १॥
अरहंत-भासियत्थं, गणहर - देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भक्ति-जुत्तो सुदणाण-महोवहिं सिरसा॥ २॥

इच्छामि भंते ! सुदभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अंगोवंग-पइण्णय-पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि मरणं जिणगुण-संपत्ति होदु मज्झं॥ ८॥

श्री आचार्य भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक आचार्य वन्दनाक्रियायां। पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वंदना-स्तव समेतं श्री आचार्य-भक्ति-कायोत्सर्ग करोम्यऽहं।

श्रुतजलधिपारगेभ्यः, स्वपर-मत-विभावना-पटुमतिभ्यः।
सुचरित-तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः॥ १॥
छत्तीस-गुण-समग्गे, पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले, धम्माइरिये सदा वंदे॥ २॥
गुरु-भक्ति-संजमेण य, तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं, जम्मण-मरणं ण पावेंति॥ ३॥
ये नित्यं व्रत-मन्त्र-होम-निरता, ध्यानाग्नि-होत्राकुलाः।

षट् कर्माभिरता-स्तपोधन-धनाः, साधु-क्रियाः साधवः ।
शील - प्रावरणा-गुण-प्रहरणा,-श्चन्द्रार्क-तेजोऽधिका।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः, प्रीणंतु मां साधवंः ॥ ४ ॥
गुरवः पान्तु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्ष-मार्गोपदेशकाः ॥ ५ ॥

इच्छामि भंते ! आइरियभक्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्म-दंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, पंचविहाचारणं आइरियाणं आयारादि-सुदणाणोव-देसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुणपालणं रयाणं सव्व-साहूणं, णिच्चकालं, अंचेमि पुज्जेमि, वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ति होदु मज्झं॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बडे बाबा अर्हं नमः
सुबह 18 बार संध्या में 36 बार णमोकार पढ़ें

मंगल चातुर्मास कब और कहाँ

सन्(कब)	कहाँ हुआ	प्रदेश
1983	श्री ईसरी जी	झारखण्ड
1984	श्री मढ़िया जी	जबलपुर(म.प्र.)
1985	श्री आहार जी	टीकमगढ़ (म.प्र.)
1986	श्री पपौरा जी	टीकमगढ़ (म.प्र.)
1987	श्री घूबोन जी	अशोकनगर (म.प्र.)
1988	श्री मढ़िया जी	जबलपुर (म.प्र.)
1989	श्री कुण्डलपुर जी	दमोह (म.प्र.)
1990	श्री मुक्तागिरी जी	बैतूल (म.प्र.)
1991	श्री दि.जैन मंदिरजी बुढ़ार	शहडोल (म.प्र.)
1992	श्री कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र	दमोह (म.प्र.)
1993	श्री नन्हे मंदिर जी	दमोह (म.प्र.)
1994	श्री सिद्धक्षेत्र गजपंथा	(म्हसरुड़) नासिक (महा.)
1995	श्री दि.जैन मंदिर	फलटण (सतारा) (महाराष्ट्र)
1996	श्री महावीर दि. जैन मंदिर	अंकलेश्वर, (गुजरात)
1997	श्री दि. जैन मंदिर	मनासा, नीमच (म.प्र.)
1998	श्री दि. जैन मंदिर	इटारसी, होशंगा. (म.प्र.)
1999	दि. जैन मंदिर	बेलखेड़ा जबलपुर (म.प्र.)
2000	श्री दि. जैन मंदिर	जतारा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
2001	श्री महावीर दि. जैन मंदिर	नरसिंहपुर (म.प्र.)